आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/UD/29-150/2017-2019

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 3 | अंक 18 | उदयपुर सोमवार 01 अक्टूबर 2018 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

जन्म से मरण तक के संस्कारों में नारियल

- कृष्णा राठौड़-

रूंख वसै पंछी नहीं,
दूध देय नहिं गाय।
तीन नैण संकर नहीं,
इणरो अरथ बताय।।

बिना पंछी का वृक्ष तथा बिना दूध वाली गाय। इसका अर्थ है नारियल।

इस साधारण सी पहेली में छिपे अर्थ को कोई भी ग्रामीण बड़ी आसानी से बता देता है। उभरा हुआ मस्तक, तीन छेद मानो शंकर के तीन नेत्र, मध्य भाग में नाक के समान उभरी आकृति। बाहरी आवरण जितना कठोर उतना ही भीतर से कोमल, रसदायक, स्वादिष्ट और मिठास भरा। इस फल को अनेक नामों से जाना जाता है- नारेळ, नारिकेर, नाडिकेल, नारिकेली, नालिकेल, तुंग, पयोघर, सूण्डफल। इनमें एक नाम 'श्रीफल' भी है। श्री शब्द संस्कृत में लक्ष्मी का भी प्रतीक है। फल का भावार्थ यहां प्रसाद से

क्रोध में आकर अपने तपोबल से एक नये स्वर्ग की रचना कर दी। यहां पर उल्टे लटके हुए राजा त्रिशंकु ने कहा, राजर्षि अब मेरी कौनसी गति होगी?

विश्वामित्रजी बोले, राजन! कुछ समय बाद देवासुर संग्राम छिड़ेगा जिसमें आपको भी भाग लेना होगा। इसमें आपके घायल होने पर पृथ्वी पर तेज गर्मी उत्पन्न होगी। शरीर में लगे हुए बाणों से धरती पर जो रक्त की बूंदें गिरेंगीं उनसे लम्बे-लम्बे और

लिया गया है। नारियल की सदैव सर्वत्र सभी कालों में, सभी कर्मों में उपयोगिता पाई जाती है।

जन श्रुतियां बतलाती हैं कि विश्वामित्र ने अपने तपोबल से राजा त्रिशंकु को सशरीर स्वर्ग में भेजने की चेष्टा की थी, परन्तु स्वर्ग के महाराज इन्द्र ने इसे वहां प्रविष्ट होने से रोक दिया। कहा कि मल-मूत्र, दुर्गन्ध से बने हुए आपके शरीर के पापों के नष्ट हुए बिना आप यहां रहने योग्य नहीं हैं। अतः अधोमुख किये वापस पृथ्वीलोक को लौट जाओ। मार्ग में ऊंचे-ऊंचे पेड़ विकसित होंगे। उनकी चोटी पर फल लगेंगे जिन्हें नारियल कहा जाएगा। यही श्रीफल या नारियल है। इसे कहीं नारियल, लारेल, ललेर, खोपा, नारेल, पंचकोष कहा जाता है। यह मूलतः दक्षिण भारत की उपज है। सम्पूर्ण केरल प्रदेश इसी फल से जड़ा हुआ है। मलयालम में इसके पेड़ को 'तेंग' और नारियल को 'तेंगा' कहते हैं। केरल के साधारण जनजीवन में नारियल के पेड़ महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

यह खजूर जाति का पेड़ है। सामान्यतः इस पेड़ की ऊंचाई 18 से 30 मीटर तक होती है। चोटी पर नारियल के गुच्छे लटकते देख हर किसी का दिल इन्हें तोड़ने को ललचा जाता है। देवी-दवताओं के अनुष्ठानों, पूजा, अर्चना, हवन, वाग्दान संस्कार एवं वैवाहिक कार्यों से लेकर विभिन्न प्रकार के रोगों में काम आने वाला यह फल पंचकोष का प्रतीक है।

नारियल के मध्य में जल होता है और इर्दगिर्द पांच कोषों के रूप में पांच आवरण होते हैं जिन्हें हटाने पर जल निकल आता है। यह मधुर स्वादिष्ट एवं गुणकारी होता है। नारियल का पेड़ एवं फल का प्रत्येक हिस्सा उपयोगी है। तना वर्षों तक पानी में पड़े रहने पर भी सड़ता-गलता नहीं। इसी वजह से तने की लकड़ी से प्रायः नावें एवं बांध बनाए जाते हैं।

दक्षिण भारत के सामान्य परिवारों में इसकी डाली (टहनी) को तोड़कर दांतून के रूप में काम में लेते हैं। पत्तों की टहनियों को गांवों में लोग कच्चे घरों की दीवारें बनाने, छप्पर बनाने एवं ईधन के रूप में उपयोग करते हैं। इनसे बने घरों को केरल में 'ओयला' कहा जाता है। फर्नीचर, टोकरियां, चटाइयां, थैले, रस्सी, ब्रश बनाने में भी इसी का उपयोग होता है। केरल के बने पायदान एवं झाड़ू विश्वभर में प्रसिद्ध हैं।

नारियल को सुखा कर खोपरे से बड़े पैमाने पर तेल निकाला जाता है। अधिकांशतः दक्षिण भारत के लोग खाद्य पदार्थों में इसी के तेल का प्रयोग करते हैं। लोकप्रिय खाद्य सामग्री पालअपम के अलावा तेल से साबुन, कांतिवर्धक प्रसाधान-वस्तुएं तैयार की जाती हैं। इसके कवच को पीसकर उससे बने पाउडर से बिजली का सामान बनाया जाता है।

खोपरे से तेल निकालने के बाद बड़े पैमाने पर बची सामग्री को मिलाकर पशु आहार तैयार किया जाता है। इसका तेल बालों की जड़ों तक सुगमता से पहुंच जाता है। इसी कारण दक्षिण भारत के लोगों के बाल ढलती उम्र तक काले दिखाई देते हैं।

मध्यम, सामान्य श्रेणी के परिवारों में इसके वृक्ष लड़कियों को दहेज में दिये जाते हैं। दहेज में दिये गए पेड़ों से हर वर्ष होने वाली आय लड़की की सम्पत्ति मानी जाती है।

नारियल के विकसित होते फल पर लगे फूल को काटकर एक खट्टा-मीठा पेय पदार्थ निकाला जाता है जिसे 'टांडी' कहते हैं। इसको अक्सर सूर्योदय के समय ही काटकर ताजा पेय के रूप में पीते हैं। काटने के बाद इसे देर से पीने पर इसमें एल्कोहल की मात्रा बनने लग जाती है। राजस्थानी लोकजीवन में नारियल बालक के जन्म से मृत्यु तक प्रत्येक धार्मिक अनुष्ठान में काम लेते हैं। बच्चे के जन्म पर होने वाले

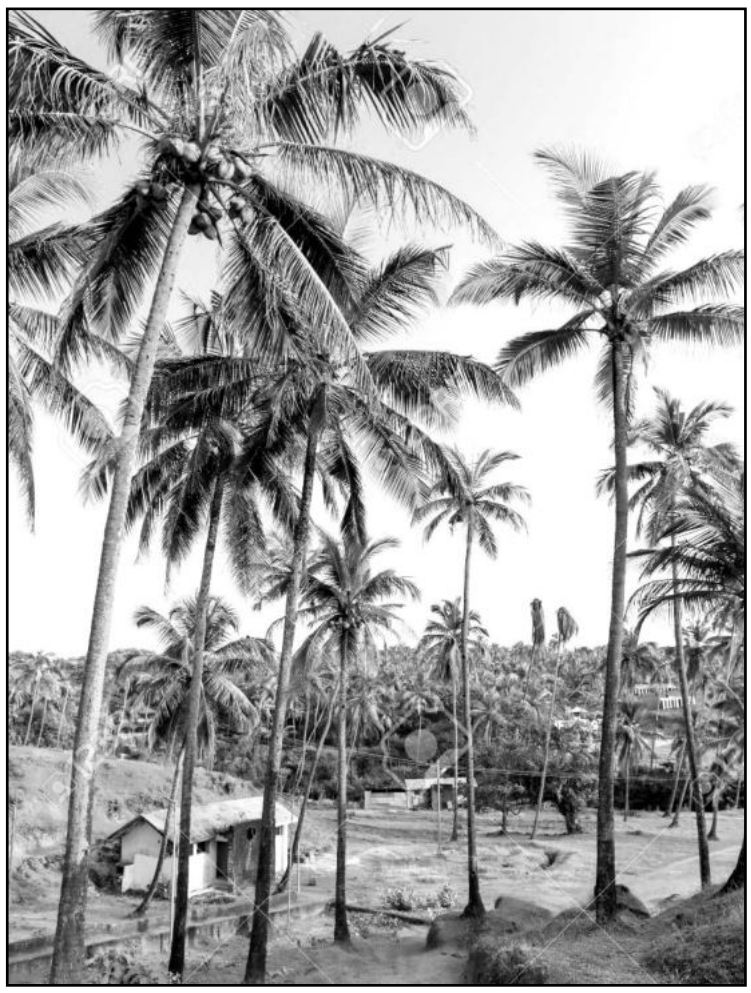

नामकरण संस्कार, विवाह, सगाई के दस्तूर पर सोने-चांदी का कवच चढ़ाकर नारियल भेंट करने की परम्परा देखने को मिलती है। विवाह में बारात की विदाई पर भी बाराती को नारियल दिये जाते हैं। बहू की खोल भरने, बनौरी निकालने, पडुलो ले जाने के समय भी नारियल का होना जरूरी है।

लोकगीतों में भी नारियल समाया हुआ है। अनेक स्थानों पर स्थानीय

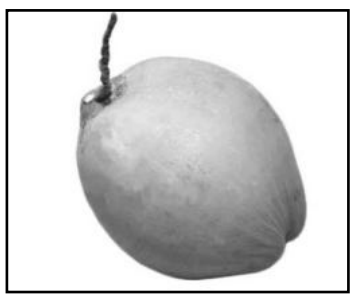

पर्व भी इस फल से जुड़े हैं। ग्रामीणों में आज भी ऐसी मान्यता है कि विपत्ति के समय में रूग्णावस्था में इस फल का अर्चना कर दक्षिणा सहित दान देते हैं। जिगर की बीमारी में इसका जल विशेष लाभप्रद है। स्त्रियों के प्रदर रोग में भी इसका उपयोग होता है। सिर दर्द दूर करने के लिए इसकी गिरी को इसबगोल के साथ शुद्ध घी में भुनकर चीनी मिलाकर नित्य प्रति प्रयोग करने से लाभ होता है। हृदय रोगी भी दवा के रूप में इसका प्रयोग करते हैं। 'भींत में भैरूजी बोले' कहावत नारियल के साथ जुड़ी हुई है। वृक्ष की ऊंचाई पर लगने के कारण इसको अधरगंगा भी कहते हैं।'

पोथीखाना

वामन से विराट बने बालकवि बैरागी

भरतीय काव्य-मंचों पर लगातार अपनी काव्य-शक्ति का लोहा मनवाने वाले और लोकसभा, राज्यसभा तथा मालवा की विधानसभा में अपनी साहित्यिक ऊर्जा की मननीय मटक देने वाले दादा बालकवि बैरागी का 23 मई 2018 की रविवार को चलते-फिरते कठोर, कर्मशील रहते निधन हो गया। उनके सान्निध्य में सदाचार की संवेदनशीलता का सम्मोहन देने वाले डॉ. पूरन सहगल ने निधन के दो महीने में ही 'वामन से विराट' पुस्तक लिखकर बैरागीजी की गागर में सागर भर दिया।

मेरा यह सौभाग्य रहा कि मैं समान भाव से बैरागीजी और डॉ. पूरन सहगल दोनों के नजदीक था। जब बैरागीजी मिलते तो मैं पूछता, सहगलजी कैसे हैं? और जब सहगलजी मिलते तो पूछता, बैरागीजी कैसे हैं? कई कार्यक्रमों में मैं दोनों के साथ गया हूं। मैंने भी कभी कोई समारोह आयोजित किया तो दोनों का साहचर्य मुझे मिला। शायद इसीलिए नीमच में इस पुस्तक के लोकार्पण का मैं सहभागी बना।

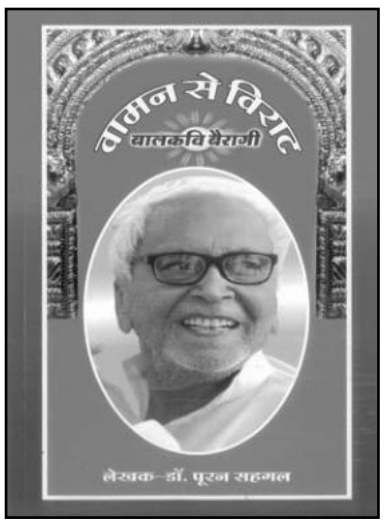

पुस्तक के प्रारम्भ में अनुभूति में पूरन भाई लिखते हैं- 'दादा पर मेरी यह किताब भी वामन ही रहे किन्तु इसकी विराटता बनी रहे ऐसा मैंने प्रयत्न किया है। दादा के जन्म से लेकर महाप्रयाण तक की जीवन यात्रा इस पुस्तक का प्रदेय है। इसके अगले प्रसंग पृथक-पृथक होकर भी परस्पर क्रमिक स्तर पर जुड़े हैं, इनकी तारतम्यता बरकरार है। प्रत्येक प्रसंग दादा के विभिन्न स्वरूपों को छविमान करता है।

लिखते समय कलम और विचारों पर संयम का अनुशासन बनाए रखना कठिन अवश्य था असंभव तो नहीं था।'

पहलीबार बालकवि से जब मेरी भेंट हुई तो उन्होंने कहा था कि मंगते अर्थात् भीख मंगे से उनका जीवन प्रारम्भ होकर मंत्री तक पहुंचा। वे बस्ती से आटा मांग कर लाते तब ही उनके घर में चूल्हा जलता और सबका पेट भरता। सहगलजी ने इसी पक्ष को बड़ी खूबी से इस तरह व्यक्त किया- 'अपने मोहल्ले में रहने-बसने वाले ऊंट पालक कूंजड़े, गधे पालक कुम्हार, कपड़े धोने वाले धोबी, तेली आदि थे। ऐसे मोहल्ले में इनके पिता महंत द्वारिकादासजी बैरागी का घर था। पिता पैरों से अपंग। सारंगी बजाने में पारंगत। रामचरित्र मानस पूरी कंठस्थ। जब सारंगी पर वे अपने मधुर कण्ठ से मानस की चौपाइयां गाते थे तब लोग जागते थे। गाती तो बैरागीजी की मां भी मधुर ही थी। वे जागती और मीरां-चन्द्रसखी के गीत गाती हुई अपने काम में लग जाती थीं।

बस्ती में जाकर जजमानों के घरों से आटा-रोटी मांगना उनका पारम्परिक अधिकार था। मां के साथ उन्होंने भी द्वार-द्वार 'रामजी की जै' का उद्घोष किया था। उन्होंने मुझे बताया कि रामजी की जय में बहुत शक्ति होती है। बस्ती मां-बाप होती है। किसी के द्वार पर जाकर 'रामजी की जै' का उद्घोष लगाता7 गृहणी बाहर आती। मेरा सीधा-सपाट उत्तर होता- 'मां भूख लगी है।' तब वह हाथ पकड़कर भीतर ले जाती, बैठाती और थाली परोस देती। मेरे लिए तो रामजी की जै आज के ए.टी.एम. जैसा था। रामजी की जै का कोड लगाओ, रोटी हाजिर। बैरागीजी चंदन तिलक लगाते थे। गले में तुलसी मनकों की कण्ठी पहनते थे। जब यात्रा निकलते थे तो तुलसी बिरवे को प्रणाम कर एक पत्ता मुंह में रख गाड़ी में बैठते थे।'

पुस्तक में ऐसी अन्तरंग बातें और समय-समय पर उठते-बैठते-चलते जो वैचारिक सूत्र अनायास उमड़ते रहे, उन सबको सहगलजी ने बड़ी तरतीब से संवारा है। ऐसा अपनेपन का आत्मजीवी उन्मुक्त लेखन बहुत कम लोगों ने किया है। इससे बैरागीजी का वामन भी विराट बना है। बैरागीजी के माध्यम से यह तो सीख मिलती है कि व्यक्ति यदि सोच और संकल्पबद्ध अपने पुरुषार्थी विवेक से चाहे तो शून्य से शिखर तक की यात्रा कर सकता है। पुस्तक प्रत्येक के लिए सर्वतोभावेन पठनीय है।

बुलन्दप्रभा की प्रभावना में डॉ. गोयनका पर विशेषांक

डॉ. कमलकिशोर गोयनका एक ऐसा होनहार नाम है जिन्होंने अपने जीवन का अधिकांश स्वर्णिम समय उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द के समग्र लेखन की तलाश में लगाकर कोई विकल्प नहीं रहने दिया। साहित्य के इतिहास में ऐसा अदम्य साहसिक कार्य कर उन्होंने सचमुच सोने पर सुहागा ही जड़ दिया।

इस दृष्टि से वे प्रेमचन्द के अज्ञात और अजाने साहित्य को खोजकर लाने वाले, उसके अतल-पतल में परिभ्रमण करने वाले, उसके व्यर्थ सिद्ध होने वाले को टकसाली अर्थ देने वाले पर्याय ही सिद्ध हो गये हैं। ऐसा अनुपम कार्य तो प्रेमचन्दजी के सुपुत्र भी नहीं कर पाये जिनके पास उनकी अनमोल साहित्य-सम्पदा की गठरी संभली हुई थी लेकिन उसी गठरी के बहुमूल्य को कचरते-गचरते दलदल से हंस-पांखी बन गोयनकाजी ने जो कमल खिलाया वह राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की काव्य-पंक्ति 'हां-हां जवाब तब तो गूलर भी फूल देगा' को चरितार्थ करने वाला ही सिद्ध हो गया है।

इस सिद्धि से गोयनकाजी तो धन्य हो गये किन्तु साहित्य के कुछ महारथी अन्य हो गये। साहित्य में अनन्य होने की रगड़पट्टी नई नहीं है। दो पहलवानों की तरह दो दिग्गजों की कशमकश निरन्तर चलती रही है। यह मनुज-स्वभाव भी है। कोई किसी की बढ़ोतरी को यदि स्वीकार कर ले तो उसकी बढ़ी हुई साख को बट्टा लगता मान लिया जाता है। इसी सोच ने बहुत सारे अच्छे कार्य नहीं होने दिये। मानवीय मूल्यों के क्षरण अथवा अध:पतन के ऐसे कई किस्से हमें कई बार रोमांचित करते तो कई बार हतप्रभ करते हैं।

यह सब लिखने का प्रयोजन त्रैमासिक 'बुलन्दप्रभा' है जिसका जनवरी-जून 2018 का संयुक्तांक प्रेमचन्द विशेषज्ञ डॉ. कमलकिशोर

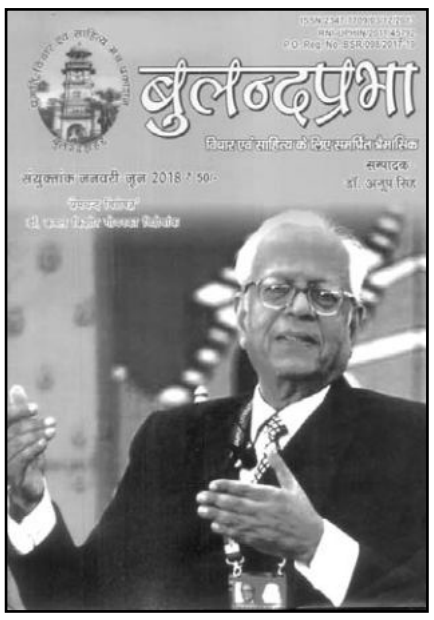

गोयनका विशेषांक है। सम्पादक डॉ. अनूपसिंह ने सम्पादकीय में डॉ. गोयनका का परिचय देते लिखा कि उन्होंने प्रेमचन्द के जीवन, विचार तथा साहित्य के अनुसंधान एवं आलोचना के लिए आधी शताब्दी अर्पित कर देश-विदेश में प्रेमचन्द विशेषज्ञ के रूप में ख्याति ली। प्रेमचन्द पर 30 पुस्तकें तथा अन्य हिन्दी साहित्यकारों पर 23 पुस्तकें लिखीं। लगभग 70 विद्वानों ने प्रेमचन्द सम्बन्धी शोधकार्य का मूल्यांकन करते हुए उनकी मौलिकता तथा महत्ता से उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय स्वीकृति प्रदान की।

विशेषांक के लगभग 45 आलेखों में 10 के करीब तो डॉ. गोयनकाजी के ही हैं। अपनी जन्मभूमि बुलन्दशहर के अलावा वह दौर जब प्रेमचन्द के अलावा कुछ सूझता न था, प्रेमचन्द के अप्राप्त लेख, प्रेमचन्द और समाजवाद, प्रेमचन्द, डॉ. रामविलास शर्मा और मैं, नामवरसिंह का आलोचना विवेक जैसे आलेखों में गोयनकाजी ने बड़ी बुलन्दगी के साथ जहां प्रेमचन्द के सम्बन्ध में विद्वानों द्वारा लिखित गलत सूचनाओं, मान्यताओं और बड़बोलेपन की खबर ली है वहीं उनके स्वयं के सम्बन्ध में जो बचकाने आक्षेप लगाये गये हैं, उनका पर्दाफाश किया है।

अन्य लेखकों द्वारा डॉ. गोयनकाजी पर कई कोणों से लिखा गया है। एक तरह से यह उनका अभिनंदन ग्रन्थ ही बन पड़ा है। बड़ी साइज का यह 160 पृष्ठीय विशेषांक बड़ा ही मूल्यवान और संक्षेप में ही सही पर डॉ. गोयनकाजी के साथ-साथ प्रेमचन्द को भी नये सोच, विवेक और विशदता के साथ जानने-समझने की भूमिका देता है।

मुख्य सम्पादक रमेश प्रसून 4/75 सिविल लाइन्स, टेलीफोन केन्द्र के पीछे, बुलन्दशहर-203001 से प्रकाशित यह अंक 50/- रूपये का है। कवर पृष्ठों पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, अटलबिहारी वाजपेयी तथा राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह, डॉ. अब्दुल कलाम एवं प्रणव मुखर्जी के साथ डॉ. गोयनकाजी के विविध चित्र उनके हिन्दी-साहित्य से सम्बन्धित किये गये कार्यों के साधनाशील समर्पण को उज्ज्वल प्रतीति देते सुहाते हैं।

गीताम्बरी विमर्श

मधुकर गौड़ एक ऐसे रचनाकर्मी हैं जो पिछले पांच दशक से अखिल भारतीय कवि मंचों पर अपनी गति सम्पदा से सुनाम लिये हैं। उनका रचना

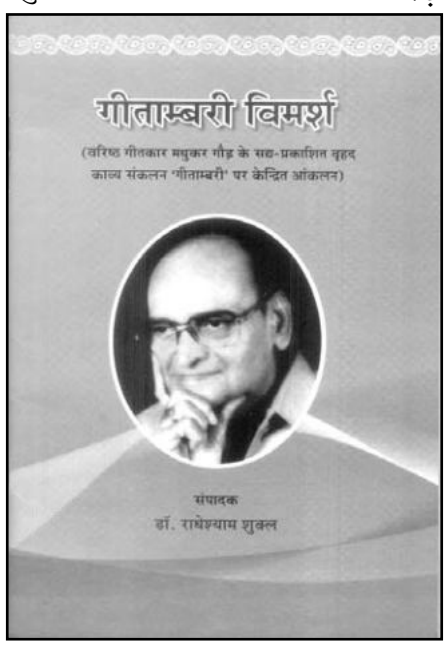

संसार बड़ा व्यापक है। गीत-गजल से लेकर मुक्तक, रूबाई, शेर, दोहा छन्द में विपुल मात्रा में रचनाकर हिन्दी एवं राजस्थानी में बहु प्रशंसित प्रकाशन दिये हैं। गीत तथा नवान्तर गीत नाम से भी उनके द्वारा सम्पादित संग्रहों ने काफी धूम मचाई है।

उनका सर्वाधिक गीत संग्रह गीताम्बरी है जिसका प्रकाशन 2016 में हुआ। इसको साहित्य जगत में बड़ी सराहना मिली और सौ से अधिक काव्य-प्रेमियों, रसिक-विद्वानों, आलोचकों तथा कवियों ने अपने मत-सम्मत से मधुकर गौड़ को समृद्ध रसवान बनाने के साथ-साथ कई पत्र-पत्रिकाओं में दस्तावेजीय दर्शना दी।

गीताम्बरी विमर्श में उन सब मतों-सम्मतों का संचयन सम्पादक डॉ. राधेश्याम शुक्ल ने बड़े कुशल मनोयोग से किया है। अपनी सम्पादकीय टीम में वे लिखते हैं- मधुकर गौड़ आज ऐसे मुकाम पर खड़े हैं जहां एक ओर गीत, नवगीत और गीत नवान्तर की नव्यतम भंगिमाएं, स्वास्तिकामी मुद्रा में उन्हें आश्वस्ति दे रही हैं और दूसरी ओर बौद्धिक बोझिलता से बोझिल सीढ़ी पर गद्य तथा कथित कविता का मुखौटा लगाये दांतों तले अंगुली दबाकर, आवाक निहार रहा है और ईर्ष्यायुक्त सराहना के भाव से यह कहने के लिए बाध्य हो रहा है कि 'यह है शुद्ध नातन भारतीय कविता।' मूल रूप से गीत लिये इतना बड़ा काम शायद हिन्दी में और किसी ने नहीं किया जितना मधुकर गौड़ ने।

कुल 156 पृष्ठीय इस पुस्तक में डॉ. रामजी तिवारी, डॉ. शान्ति सुमन तथा हृदयेश मयंक के विशेष लेख हैं। आंकलन हस्ताक्षर के अन्तर्गत पच्चीस विद्वानों की आलेख संगत टिप्पणियां हैं जबकि विविधा में लगभग सौ टिप्पणियां हैं जो विविध विद्वानों द्वारा की गई हैं। मरूधरा प्रकाशन मुम्बई से छपी इस पुस्तक की कीमत 300 रूपये है।

-म. भा.

खोज-खबर

भरेवा कला की पहचान देते रामनारायणजी

भरेवा से तात्पर्य भरने से है। भरने की क्रिया करने वाला कलाकार भरावा कहलाता है। भरना कर्मगत विशेषण है जो आगे जाकर जाति के रूप में रूढ़ हो गया और जातिगत संज्ञा के रूप में मान्य बन गया। मेवाड़ के कई गांवों में इनकी छितरी हुई बस्ती है।

सन् 1983 की तीन फरवरी को मैं अपने साला-सुपुत्र नरेन्द्रसिंह भाणावत के बुलावे पर आदिवासी क्षेत्र धरियावाद गया। वहां मैंने लोकशिल्पी रामनारायणजी भरावा से भेंट की और उनके द्वारा बड़े कड़े परिश्रम से तैयार की जा रही विविध शिल्प कृतियों को देखकर दंग रह गया। इस कार्य में न केवल वे अति दक्ष थे अपितु कई तरह की जानकारियों से भी समृद्ध थे। उनसे भेंट करने का एक अच्छा पक्ष यह भी बन गया कि धरियावाद में रहने से पूर्व वे मेरे जन्म स्थान कानोड़ में भी रह चुके थे। मेरे पिता प्रतापजी (प्रतापमलजी) तथा दादा जीत्याबा (जीतमलजी) से वे परिचित निकले जो अरनिया नामक करसाणी गांव में लेनदेन का काम करते थे। वे भी इनसे दो-चार बार भील-मीणा महिलाओं के पांवों में पहनने की पैंजणियां, नेवरियां तथा कड़ियां ले गये थे।

रामनारायणजी ने बताया कि किसी समय उदयपुर की आयड़ में भरावों की अच्छी बस्ती थी। अब गोगुन्दा, खेरोदा, गुमानपुरा, आमेट और ठेठ भीलवाड़ा के पुर बागोर गंगापुर गांव में इक्के-दुक्के परिवार हैं। मेहनत ज्यादा और कमाई कम होने से यह धंधा अब ठप्प पड़ गया है। नये जमाने की फैशन ने भी इस काम को ठंडा कर दिया। बापदादों तथा बड़ों से जो हुनर मुझे मिला तो मैं इसकी धक्का गाड़ी खींच रहा हूं। अगली पीढ़ी तो इसे करना तो दूर, देखना तथा सूंघना भी पसंद नहीं करेगी।

भरावा कौन थे और कहां से आये? पूछने पर रामनारायणजी ने थोड़ा विसराम लिया। बीड़ी का कस खींचते कहा, पूर्व में हम राजपूत थे। सिद्धपुर पाटन से अपना निवास मानते हैं। राजा महाराजाओं के वहां सैनिकों का काम करते थे।

एकबार किसी सुनार से सोने की मूरत बनवाई। सुनार तो उसे ठीक से नहीं बना सका पर उसके देखादेख हमारे सैनिक ने सांचे में पिघली धातु की भराई कर खूबसूरती से मूरत तैयार कर दी। उसकी कला देख राजाजी बड़े खुश हुए और ईनाम देकर वाह रे भरावा कह उसकी पीठ थपथपाई तब से हमारे जिम्मे यह काम पड़ गया और हम भरावा नाम से जानने लग गये।

भरावा जाति की वंशावली बांचनेवाले बही भाट के संबंध में पूछने पर रामनारायणजी बोले, नवाणिया गांव के जगदीश व सत्यनारायण ने एकबार बताया था कि मारवाड़ के पचपद्रा पाटन से हमारा उठाव हुआ। दो भाइयों में से बड़े ने राजगद्दी पकड़ी। छोटे ने एकबार एक बड़ी मूर्ति किसी सुनार से बनवाने का जिम्मा लिया सो सुनार ने आधे से अधिक सोना खाने की नियत से उस मूर्ति में खोट मिला दी।

सुनार चाहता था कि इस बात को गुप्त रखा जाये पर उस भाई ने चौड़े कर दी और खुद ने भरत मिलाकर सुनार से अधिक अच्छी मूरत बना दी सो छोटे भाई की चारों ओर वाहवाही फैल गई पर उसका नाम ही भरावा के रूप में चर्चित हो गया सो हम उसके वंशज हैं। घूमफिर कर बात वहीं है। हमारे में जो गोत्रें चलती हैं वे भी राजपूतों से मिलती सोलंकी, भरोतिया, दाइमा, पारेता, मंदेड़ा, मंगरा, जादम उसी काल-समै की हैं। देवी आशापुरी ने टूटमान होकर मिट्टी परखने की सीख दी तो वंश-वेल आगे बढ़ी।

मेवाड़ में भरावा महाराणा हमीर-लाखा के समय आये और आदिवासियों में महिलाओं के पहनने के गहने बनाने लगे। इनमें कड़ा, नेवरी, पैंजणियां, पागड़े, डोले, माटड़ी, कांकणी, करगदी, ठाम, घाणी मुख्य हैं। ये पीतल के होते हैं। गरीब महिलाओं के लिए पीतल की जगह गिलट और एल्युमिनियम के गेणे, गहने बनाये जाते हैं। इनके अलावा देवी-देवताओं की प्रतिमा, देवरे में धूप देने का धुपाना, आरती, नाचते समय कमर में बांधने की चौरासी के घुघरे, गुगर्‌ये बाबे के पहनने के घुघरे भी बनाते हैं। पशुओं में ऊंट को पहनाई जाने वाली नेवरियां, घोड़े के तंग पागड़े भी कभीकभाक लोग बनवाकर ले जाते हैं।

रामनारायणजी ने बताया कि वे सब तरह की चीजें बनाने में दक्ष हैं। प्रतापगढ़ का मांगीलाल, भीलवाड़े का लक्ष्मीनारायण तथा ऊंठाले के प्यारचंदबा और मोहनलाल भी बड़े नामी हैं। मेवाड़ में राजा-राणाओं के जमाने में उनके पुरखों द्वारा बनाई गई मूरतें अब तक मुंह बोली देखी जा सकती हैं। एकलिगंजी मंदिर का विशाल नंदी आज वैसा का वैसा बड़ा चमत्कारी लगता है। कांकरोली का चौमुखा महादेव, जोगणिया माता का झालरा, बिलिया गांव की पंद्रह किलो की रामदेव महाराज की प्रतिमा, उसके नीचे सिंघासण में हरजी भाटी, डालीबाई और रामदेवजी एक साथ बने हुए हैं। भीलवाड़ा की कृषि उपज मंडी में बना नौ किलो वजनी नाग हांचीका, सचमुच का नाग लगता है। धरियावद में किसी से पूछलो काला गोरा भैरू री मूरत, प्रतिमा कोई भी बता देगा।

मैंने इन सभी जगहों की यात्रा की है। इस दौरान देखा कि देवी-देवता के साथ ये मूरतें भी लोग बड़े ध्यान से देखते हैं और हाथ जोड़ते हुए नमन करते हैं। मैं दूसरे दिन भी रामनारायणजी से मिलने गया। उन्होंने कहा कि जिसके हाथ में हुनर हो वह कहीं भी चला जाय, भूखा नहीं मरेगा। वे दो तरह के गहने ढालते हैं। एक वे जो पूरी तरह खोखले होते हैं और दूसरे वे जो नींगोट यानी ठोस होते हैं। वे मिट्टी की मूसों और सांचों का निर्माण कर गहनों को आकार देने में व्यस्त थे। इनके लिए गारा यानी मिट्टी और मोम तथा राल मुख्य है। मिट्टी एक तो काली होती है। एक पीली। एक चीकनी और एक गबोटी। इसे पहचान कर नदी के किनारे से लाते हैं। डड़बों को मोटी लकड़ी की मोगरी से कूट-पीट कर एकमेक कर बेसन जैसा महीन बना लेते हैं। इसमें गाय-भैंस का गोबर आधो-आध यानी जितना गारा, मिट्टी उतना गोबर मिलाकर लेप तैयार किया जाता है।

काली गार में घोड़े-गधे की लीद मिलाई जाती है। इससे जो चीजें बनाई जाती हैं, वे तड़कती, फटती नहीं हैं। पीली गार व लाद मिलाकर मूंस बनाई जाती है। इसी से सांचे भी बनाये जाते हैं। अटोकणो यानी स्टेंड वाली मूंस में पीतल को गर्म करते हैं। सांचे में गार की चूड़ियों पर मोम की खोल चढ़ाई जाकर उन्हें बंद कर दिया जाता है। चूड़ियां दो, ढाई, पोने तीन इंच व्यास की होती हैं। इन पर मोम के साथ राल मिलाकर चढ़ाया जाता है। सांचों में डोरी से बंद कर इन्हें बड़े जतन से इस तरह भट्‌टी में रखा जाता है कि गर्म करते ही मोम पिघल बाहर आ जाता है और उसकी जगह पिघली हुई मूंस पीतल ले लेती है। इसे ठंडा करने के बाद जब फोड़ा जाता है तो पिंजणियां निकल आती हैं। इस समय उनका रंग काला होता है मगर रेतड़े से घिसने पर उनकी चमक बन आती है और मिट्टी बाहर निकाल दी जाती है।

पिंजणियां पहनने में आसानी रहे इसलिए उनके एक मुंह को काटकर नाका बना दिया जाता है। चूड़ियां छह होती हैं। भट्‌टी पकाने का काम सात दिन में एकबार किया जाता है। भट्‌टी में लकड़ियों की बजाय गोबर के छापले यानी छाणे अथवा कंडे काम में लिये जाते हैं। कंडे मोटाई के अनुसार एक रूपये में दो या तीन, लीद 15-20 रूपया गुणा, राल 50-60 रूपया किलो मिल जाती है।

पीतल को आसानी से गलाने के लिए थोड़ा जस्ता मिला दिया जाता है। मेलोंठेलों में इन चीजों की बिक्री के लिये भरावा दुकानें लगाते हैं। शिवरात्रि से वैशाखी पूर्णिमा और श्रावणी पूर्णिमा से कार्तिक पूर्णिमा तक लगने वाले मेलों में इनकी अच्छी कमाई होती है। घरों से टूटभाग, खुरचण तथा कबाड़े हुई धातु खरीद कर ये अपना काम चलाते हैं।

- म. भा

1994 में 'निर्भय मीरां' का लोकार्पण

डॉ. महेन्द्र भानावत के लेखन की कृतियों में सर्वाधिक चौंकाने वाली कृति 'निर्भय मीरां' रही है। विद्वानों ने इस पर बड़े चमत्कारिक और बहस को विस्तार देने वाले मंतव्य दिये हैं। लेखक की यह 50वीं कृति है। इसके लिए लेखक ने सर्वाधिक शोधात्मक भ्रमण कर उन अनेक तथ्यों का उद्‌घाटन किया है जिन पर किसी की निगाह ही नहीं गई।

इसका लोकार्पण शुक्रवार 12 अगस्त 1994 को उदयपुर के गांधी स्मृति मन्दिर सभागार में रखा गया। इस अवसर पर शहर के अनेक ख्यातलब्ध विद्वान्, वरिष्ठ सम्पादक एवं वरेण्य नागरिक उपस्थित थे। लोकार्पण पूर्व सांसद ओंकारलाल बोहरा ने किया जो कलकत्ता से 'विशाल राजस्थान' नामक साप्ताहिक के प्रकाशक-सम्पादक थे। अध्यक्षता कवि-समीक्षक नंद चतुर्वेदी ने की। मुख्य अतिथि प्रसिद्ध कवयित्री श्रमजीवी महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. प्रभा वाजपेयी थीं। संयोजन डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' ने किया। साप्ताहिक नवजीवन के सम्पादक कनक 'मधुकर', सुलगते प्रश्न के सम्पादक सुरेन्द्र शर्मा एवं शिक्षाविद् राधामोहन पुरोहित ने भी उल्लेखनीय उपलब्धि दी।

समारोह में विद्वानों ने जो विचार-मंतव्य प्रस्तुत किये वे इस प्रकार रहे-

इतिहास और पुरातत्व जहां अपने हाथ खड़े कर देते हैं वहां लोकसाहित्य ही हमारा सम्बल बनता है। डॉ. भानावत ने यह कार्य कर हमारी संस्कृति का बड़ा संरक्षण किया है।

- डॉ. पुरुषोत्तम छंगाणी

डॉ. भानावत का लेखन चित्रात्मक शैली लिये कई नये और अनूठे बिम्बों को संवारने वाला होता है।

- डॉ. रजनी कुलश्रेष्ठ

डॉ. भानावत से सहमत होना, नहीं होना दिगर बात है किन्तु उन्होंने मीरां के उन पक्षों को बड़ी ईमानदारीपूर्वक उद्‌घाटित किया है जो पहलीबार पढ़ने को मिले हैं।

-डॉ. विश्वंभर व्यास

डॉ. भानावत ने निर्भय मीरां में एक विचित्र चरित्र की सृष्टि की है। लेखक ने अपनी सृजनात्मक लोकयात्रा से इस कृति को मीरांमय बना दिया है।

- डॉ. पूनम दईया

डॉ. महेन्द्र भानावत एक फिनोमीना ही हैं। उन्होंने लोकसाहित्य को प्रतिष्ठा के उच्च प्रतिमान दिये हैं। साहित्य में तिथियों और नामों के सिवाय सब कुछ सत्य है जबकि इतिहास में केवल तिथियां और नाम ही सत्य होते हैं। ऐसे में साहित्य संभाव्य सत्य की तलाश करने वाला होता है।

- नंद चतुर्वेदी

डॉ. भानावत की यह कृति लीक से हटकर कुछ कहने का साहस लिये है। विवादों को जन्म देती हुई भी इसका चर्चित होना असंदिग्ध है।

- डॉ. भगवतीलाल व्यास

यह कृति विवादास्पद किन्तु नई स्थापनाओं के कारण चर्चित होगी।

- डॉ. नवलकिशोर शर्मा

मीरां एक मिथक है जिसे समझने के लिए डॉ. भानावत ने एक दृष्टि प्रदान की है। इसका मुखपृष्ठ लेखक की अन्तरात्मा का आलेख है।

- डॉ. घनश्याम 'शलभ'

निर्भय मीरां की तरह रचनाकार डॉ. महेन्द्र भानावत ने भी उतनी ही निर्भयता और साहस के साथ मीरां के सम्पूर्ण चरित्र की सृष्टि की है जो चौंकाने वाली से अधिक चकित करने वाली है।

- राधामोहन पुरोहित

भ्रमण और भक्ति के परिणामस्वरूप डॉ. भानावत की यह कृति शोध की दिशा में एक नया शुभारम्भ है। - डॉ. प्रेमसुमन जैन

निर्भय मीरां तिलस्म जैसी विलक्षण और कौशल से ओतप्रोत है।

- राजेन्द्र सक्सेना

साहित्य की यह कृति इतिहासकारों के लिए शोध की बड़ी गुंजाइश पैदा करने वाली है। लेखक ने इसे काल पुरुष के रूप में रखा है। - सुरेन्द्र शर्मा

सम्मोहक शैली में नये सन्दर्भों को लेकर लिखी गई यह कृति वर्षों से चली आ रही मान्यताओं को पलट देती है।

- डॉ. प्रभा वाजपेयी

अपने ढंग की यह निराली कृति है जो इतिहास की कसौटी पर सही न भी हो किन्तु अनुसंधानात्मक उत्साह जगाने में बड़ी सफल होगी।

- ओंकारलाल बोहरा

डॉ. भानावत ने इस कृति को एक साधक साहित्यकार के रूप में प्रतिष्ठित किया है। वे लोक के रत्नाकर को शोध की पैनी दृष्टि से निहारकर ही अपनी स्थापना देते हैं। - कनक 'मधुकर'

अन्त में अपने लेखकीय दायित्व का निर्वाह करते डॉ. भानावत ने कहा- 'फूल तोड़ते समय कोई नहीं चाहता कि कांटा आहत हो मगर जो गुलाब को तोड़ेगा, उसके नीचे वाला कांटा तो तिलमिलायेगा ही। हम मीरां के भक्ति पक्ष की बात तो करते हैं किन्तु उसके भक्तिमय अनुराग और भक्ति-रमण को नहीं समझ पाते।

यही कारण है कि 'निर्भय मीरां' में विसंगतियां और चमत्कार ही अधिक नजर आ रहे हैं। यह भी होता है कि हम पहले से बहुत सारी धारणाएं अपने में बिठा लेते हैं तब नया कुछ जो लिखा गया है उसे स्वीकार करने में बड़ा कष्ट होता है। यह कोई शोध या इतिहास की कृति नहीं है। जो मीरां लोक की निधि हो गई उसे उसी रूप में देखने पर लगेगा कि मैंने जो लिखा वह चमत्कार नहीं अपितु मीरां का सच और उसके सार्थक जीवन की ही ईमानदारीपूर्वक बुनाई की है।'

-डॉ. कहानी भानावत

शब्द रंजन

उदयपुर, सोमवार 01 अक्टूबर 2018

सम्पादकीय

'कह' और 'मत कह' से जुड़ा मानव

इस सृष्टि को यदि गंभीरता से निहारें तो इसका प्रत्येक पक्ष बड़ा ही मजेदार, रहस्यमय, अजूबा और चमत्कार देने के साथ-साथ उपयोगी लगता है। बहुत सी चीजें तो हमारे सुनने, समझने तथा देखने में ही नहीं आई हैं। इनमें सबसे मजेदार समझू एवं जीवन्त पूर्ण प्राणी मनुष्य लगता है। वही सृष्टि को बोल, वाणी तथा वैभव देता है। उसकी परतें भी वही खंगालता है। पचासों तरह से उसकी व्याख्या भी वही करता है। उसे संवारने, सुरक्षित रखने, उपयोगी बनाने का उपक्रम भी वही करता है। सृष्टि जब शान्त तथा अपना संतपन छोड़ विकराल तथा भयाक्रांत रूप धारण करती है तब उसकी मान-मनावण, पूजा-अर्चना तथा अमंगल-अनिष्ट से बचाव की अभ्यर्थना भी वही करता है। यह सामर्थ्य अन्य जीवधारियों में नहीं है।

मोटे रूप में सृष्टि के प्रमुखत: दो रूप लगे- सकारात्मक तथा नकारात्मक, पक्ष का तथा विपक्ष का, तीये का तथा छक्के का, मन का तथा बेमन का, अच्छा तथा बुरा लगने का। इसको कैसे व्यक्त किया जाय ताकि वह अभिव्यक्ति श्रुत बनी, कण्ठासीन हो, सबकी जानकारी बन सके और प्रवहमान बनी रहे। यह सम्भव हुआ कथन से, कथा-कहानी से।

एक छोटी सी कहानी ने अपनी ताकत से इतनी बड़ी सृष्टि को कैसे समेटा! सो सुनिये वह कहानी जो न जाने कब बनी और अब भी सुनने को मिलती है-

''एक राजा के दो रानियां थीं। राजा तो मर गया परन्तु रानियां अभी जीवित थीं। इनमें से एक का नाम 'कह' और दूसरी का नाम 'मत कह' था। कह बादलों को कहती तो बादल गरजते। बिजलियां कड़कती और अपने अन्दर का अमृत बरसाती। मत कह के मना करने से बादल सूखा देते। अकाल पड़ता। कह बसन्त को कहती तब हरियाली फूटती, रंगबिरंगे फूल खिलते। मत कह के मना करने से पाला पड़ता। हरियाली सूखती। कह के कहने से सूरज प्रकाश देता। चांदनी जगमगाती। तारे टिमटिमाते। नदियां उफनती! झरने बहते। मत कह के कहने से चांद-सूरज को ग्रहण लगता। अंधेरी रात होती। तारे टूटते। झरने सूखते। कह के मुंह से फूल झरते। मोती बरसते। मत कह के मुंह से अंगारे झड़ते। पत्थर बरसते।'' कहानी छोटी किन्तु अपने में पूरी सृष्टि का सांगोपांग लिये है। बूंद में समुंद और ऊंट के मुंह में जीरा दोनों बातें अपनी-अपनी जगह ठीक है।

पत्र-पिटारी

'शब्द रंजन' के माध्यम से आपसे मुलाकात हो जाती है। लोक-साहित्य पर केन्द्रित हिन्दी की इस एकमात्र पत्रिका से लोक का ज्ञान हो जाता है। आपके अतुलनीय श्रम को मेरा नमन।

- प्रो. डॉ. सुरेश माहेश्वरी, अमलनेर

डॉ. शैलजा माहेश्वरी को डी.लिट्

महाराष्ट्र के अमलनेर स्थित प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय की विभागाध्यक्ष डॉ. शैलजा माहेश्वरी ने 'रामनिवास मानव के काव्य का वैशिष्ट्य' शीर्षक शोध-प्रबन्ध पर डी. लिट् की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने अपना अनुसंधान कार्य भाषाविद डॉ. इसपाक अली के निर्देशन में किया। यह उपाधि प्राप्त करने वाली वे महाराष्ट्र में हिन्दी की पहली महिला प्राध्यापक हैं। डॉ. शैलजा कवि, अनुवादक तथा आलोचक हैं। वे कई पुरस्कारों से सम्मानित हुई हैं। उन्होंने एक दर्जन पुस्तकों का लेखन-सम्पादन कर अनेक पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त किये हैं।

सदस्यगण मित्र मंडल की स्वर्ण सीढ़ी बढ़ाने में सहयोग करें : हिमांशुराय
कानोड़ियों ने अपने बूते दूर-सुदूर तक पहचान बनाई : डॉ. भानावत
धार से कुशाग्र, मुरकी सी मिठास तथा पान सी लालिमा लिये कानोड़ी : नागोरी

आजादी के पूर्व से लेकर अब तक के पिछले सौ वर्ष के काल को खंगालने से पता चलेगा कि कानोड़ वासियों ने अपने बल-बूते पर अपनी पैठ, प्रतिष्ठा, पहुंच और दूर-सुदूर तक पहचान बनाई। इसके मूल में उनका संघर्ष, जूझ, परम्परा और परिश्रम का प्राधान्य रहा है। ये विचार कानोड़ मित्र मण्डल के वार्षिक समारोह में अध्यक्ष पद से संस्थापक डॉ. महेन्द्र भानावत ने व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि 35 वर्ष पूर्व जब मित्र मण्डल की स्थापना की गई थी तब बमुश्किल सौ परिवार थे। इस आयोजन में सर्वाधिक नये सदस्य परिवारों की उपस्थिति तथा चुनाव में सभी नये चेहरों का सर्व सम्मत समावेश लोकतन्त्र के स्वस्थ एवं सुखद शकुन का परिचायक है।

चुनाव अधिकारी वरिष्ठ सदस्य सुन्दरलाल अलावत ने नई कार्यकारिणी की घोषणा करते हुए बताया कि अध्यक्ष पद पर पूर्व न्यायाधीश हिमांशुराय नागोरी, उपाध्यक्ष जीवनसिंह पोखरना तथा कोमल वया, महामंत्री दिलीप भानावत, सह सचिव संजय अलावत, सांस्कृतिक सचिव अनिल पुरोहित, कोषाध्यक्ष तखतमल भाणावत का निर्विरोध चयन मित्र मण्डल की अटूट मैत्री तथा संगठन क्षमता का सूचक है।

मंचासीन मुख्य अतिथि पत्रकार मदन मोदी ने कहा कि अब वह समय आ गया है कि हम अपना एक ऐसा कानोड़ मैत्री विहार निर्मित करें जिसमें सभी तरह के कार्य सम्पादित हो सकें।

धर्मचंद नागोरी ने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि कानोड़वासी जहां-जहां भी कार्यरत हैं वहां अपने सेवा-सहयोग से पहचान बनाये हुए हैं। उनमें चाकू की धार सा कुशाग्र बुद्धि चातुर्य, खीखे-मुरकी सा माधुर्य भाव तथा पान सा ललित लावण्य देखने को मिलता है।

डॉ. कनक उदावत ने सुझाव दिया कि एक ऐसा द्वै-मासिक बुलेटीन प्रकाशित करना चाहिये जिसके माध्यम से समय-समय पर सभी सदस्य परिवारों की गति-प्रगति एवं उपलब्धियों की जानकारी से सब जन लाभान्वित हो सकें। श्रीमती सुशीला नागोरी ने होनहार छात्र-छात्राओं के लिए निशुल्क कोचिंग कक्षाएं चलाये जाने पर बल दिया। साथ ही अभावग्रस्त बालिका शिक्षा के लिए अपना सेवा-सहयोग देने की घोषणा की।

समारोह में विभिन्न कक्षाओं में 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त छात्रों को पुरस्कृत करने के साथ ही 70 से अधिक उम्र प्राप्त वरिष्ठजनों का भावभीना अभिनन्दन किया गया।

नवनिर्वाचित अध्यक्ष हिमांशुराय नागोरी ने सबका आभार व्यक्त करते हुए मित्र मण्डल को स्वर्ण सीढ़ी बढ़ाने में सहयोग की अपेक्षा की।

इस अवसर पर डॉ. मंजु नागोरी, डॉ. तुक्तक भानावत, महावीर नागोरी, रोशनलाल कण्ठालिया, महावीर भाणावत, गौतम नागोरी, प्यारेलाल कुदाल, ऋषभ जैन, रूपलाल नागोरी, माणक जारोली, सोहन भानावत, हिम्मत अलावत, सूरज नागोरी, हिम्मत पोखरना, श्रीमती आजाद उदावत, दिलीप दक, मदनमोहन डूंगरवाल, चांदमल पीतलिया, भगवती उदावत भी उपस्थित थे। अन्त में शान्ति नलवाया दम्पती के निधन पर शोकांजलि व्यक्त की गई।

यादों के अंश का लोकार्पण

इलेक्ट्रोनिकल मीडिया के घनघोर प्रचार-प्रसार के बाद भी लिखित साहित्य की महत्ता व ताकत आज भी कम नहीं हुई है। इसका कारण हमारी सांस्कृतिक अभिरूचि है। पुस्तकें हमें जीने का रास्ता दिखाते हुए हमारा मार्ग प्रशस्त करती हैं।

इसलिए हमें निरन्तर श्रेष्ठ साहित्य की तलाश, उसका पठन व चिन्तन करते रहना चाहिए। ये विचार प्रसिद्ध आलोचक डॉ. नवलकिशोर शर्मा ने डॉ. लक्ष्मीनारायण नंदवाना लिखित 'यादों के अंश' पुस्तक के लोकार्पण के पश्चात व्यक्त किये। इतिहासविद डॉ. के.एस. गुप्ता ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में द्वन्द्व व संघर्ष मिलता है। उसके संस्मरण महत्वपूर्ण होते हैं। डॉ. लक्ष्मीनारायण नन्दवाना ने शिवकिशोर सनाढ्य के जीवन संघर्ष, शिक्षण, समाज तथा राजनीति में उनके अवदानों को संस्मरणों के माध्यम से इस पुस्तक में प्रस्तुत किया। प्रांरभ में राष्ट्रीय शिक्षा प्रसार समिति के संरक्षक नवलकिशोर शर्मा व अध्यक्ष चौसरलाल कच्छारा ने आगन्तुकों का स्वागत किया। उल्लेखनीय है कि श्री सनाढ्य शिक्षक, कर्मचारियों के नेता, पूर्व विधायक एवं नगर विकास प्रन्यास के अध्यक्ष रहे हैं।

आयोजन में बी.एल. गुप्ता, भंवर सेठ, धर्मनारायण जोशी, डॉ. सत्यनारायण माहेश्वरी, श्यामसुन्दर भट्ट, विजयप्रकाश विप्लवी आदि सम्मिलित थे। संयोजन चौसरलाल कच्छारा ने जबकि धन्यवाद हरीश सनाढ्य ने ज्ञापित किया।

-डॉ. लक्ष्मीनारायण नन्दवाना

डॉ. आतुर ने अकादमी को राजनीति से परे रखा

प्रसिद्ध साहित्यकार नवलकिशोर ने कहा कि राजस्थान साहित्य अकादमी के अध्यक्ष रहते डॉ. प्रकाश 'आतुर' ने अकादमी को राजनीति से सदैव परे रखा। उस दौरान वे साहित्य और साहित्यकारों के ही हमसफर रहे। अवसर था डॉ. आतुर की 29वीं पुण्यतिथि पर आयोजित स्मृति सभा का जिसका आयोजन प्रसंग संस्था ने किया। संस्था के अध्यक्ष डॉ. इन्द्रप्रकाश श्रीमाली ने बताया कि इस अवसर पर डॉ. आतुर के साहित्य पर शोध करने वाली डॉ. रीना श्रीमाली का अभिनंदन किया गया। सभा में डॉ. लक्ष्मीनारायण नंदवाना, डॉ. देव कोठारी, किशन दाधीच, डॉ. मंजु चतुर्वेदी, डॉ. चन्द्रकांता बंसल, डॉ. रजनी कुलश्रेष्ठ, डॉ. रमा शर्मा आदि ने महत्वपूर्ण भागीदारी दी।

कहावतों के कहकहे (8)

(83) कांजरा वाड़ क्यूं बाळी कै लदवारी देर है

(84) काजीजी तो भण्या जो भण्या पण ऊंदराई भण्या

(85) कांजी रै कसी जड़ व्है

(86) कांटी रौ जोर आकड़ा तक

(87) काठ की हांडी दूजी दाण नीं चड़ै

(88) काठ हाई छोड़ो पड़ै

स्मृतियों के शिखर (60) : डॉ. महेन्द्र भानावत

लोकनृत्यों के प्रशिक्षण में शाकुन्तलम की शकुन्तला

श्रीमती शकुन्तला पंवार पर लिखते समय बहुत सारी स्मृतियां मेरे मन-मस्तिष्क में कौंध जाती हैं। भारतीय लोककला मण्डल में रहते मैं उसके कला-कौशल के अनेक पक्षों का साक्षी बना। कलामण्डल में मेरे बाद वो आई और मुझसे पहले चली गई। संस्थापक देवीलाल सामर के साथ भी कई बार खासकर ग्रामीण अंचलों में प्रदर्शन के दौरान मैं उनके कलादल के साथ गया। हम लोग ग्राम्य लोक की संस्कृति और वहां के लोक कलाकारों से भेंट कर उनकी कला-परम्परा का दिन को अध्ययन करते और रात्रि को हमारे कलाकारों का कार्यक्रम देखते। सामरजी के निधन के बाद भी मैंने अपने दल के कलाकारों के साथ कई शहरों का भ्रमण किया जब संचालन का दायित्व मेरे पास आया लेकिन सच तो यही रहा कि बाद में कलामण्डल की वह आभा नहीं रही और हमारी स्थिति भी -'अस्ताचल में रवि करता है संध्या समय गमन, विरह व्यथा से हो जाती है वसुधा सजल नयन' जैसी हो गई।

उदयपुर के राजमहलों से जुड़ी प्रसिद्ध पीछोला झील के किनारे वाली नाव घाट बस्ती में 7 जुलाई 1947 को जन्मी शकुन्तला को गाने-बजाने-नाचने की विद्या विरासत में अपनी मां रतनप्रभा से मिली। राजदरबार तथा उनसे जुड़े ठाकुर, उमरावों के वहां रतनप्रभा के साथ शकुन्तला का बालमन भी उसी वातावरण में रमता गया। जब कलाविज्ञ देवीलाल सामर ने 1952 में भारतीय लोककला मण्डल की स्थापना की तो रतनप्रभा ने कुछ समय सेवायें देने के पश्चात शकुन्तला को वहां रख दी।

भारतीय लोककला मण्डल में सन् 1964 से 1993 तक रहकर शकुन्तला ने वहां के कलादल के साथ देश के प्रत्येक अंचल में अनगिनत प्रदर्शन दिये। इनका असर यह रहा कि सभी अंचलों में व्याप्त पारम्परिक लोककलाओं और समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण उन्नयन और पुनर्जीवन होने की बहस चल पड़ी। जगह-जगह लोककला संगोष्ठियां और लोकानुरंजन समारोह होने लगे। सर्वप्रथम तो कलामण्डल ने ही अपनी अनुभूत भूमिका दी।

मेरा सौभाग्य यह रहा कि सन् 1958 से लेकर 1995 तक कलामण्डल में रह सामरजी के साथ इन सबके शोध-खोज, शिक्षण-प्रशिक्षण तथा रचना-कर्म का सहभागी बना। कलाकारों द्वारा प्रदर्शन के दौरान ही नहीं, उनके अभ्यास काल का भी साक्षी रहा।

शकुन्तला ने बताया कि बड़े से बड़े राजनेताओं से लेकर सभी ने हमारे प्रदर्शनों को देखा, सराहा और विदेश में भी भेजा। सात बार तो राष्ट्रपति भवन में ही हमारे प्रदर्शन हुए और हम पुरस्कृत भी हुए। भारत सरकार ने ही ट्यूनीशिया भेजा जहां हमारे कलाकारों ने लोकनृत्य प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया। कुवैत, स्पेन, अफ्रीका, स्वीडन, वियतनाम, हालैण्ड, बेल्जियम, पेरिस, मलेशिया, आस्ट्रेलिया, इंग्लैण्ड, इंडोनेशिया और पड़ौसी राष्ट्र नेपाल, भूटान, सिक्कीम तथा अन्य कई राष्ट्रों में जाकर वहां की प्रदर्शन कलाओं और कलाकारों से भेंटकर एक बड़ी दुनियां देखने और बहुत कुछ सीखने को मिला।

देश-विदेश में सैकड़ों प्रदर्शन देने पर कई जगह कुछ ऐसी घटनाएं घटीं जो शकुन्तला के कला-कर्म की यादगार पिटारी बन गईं। ऐसी घटनाएं सुनाकर शकुन्तला ने रोमांचित ही कर दिया। कुछ घटनाओं का उल्लेख प्रस्तुत है।

''मूमल महेन्द्र नृत्य-नाटिका में शकुन्तला मुख्य भूमिका लिये मूमल बनती थी। सन् 1970 में घटी इस घटना में महेन्द्र के विरह में मूमल इतनी कृशकाय हो जाती है कि उसका जीना दूभर हो गया। यह देख उसकी बहिन सूमल, महेन्द्र का रूप धर आई। हम दोनों हमबिस्तर हो मन बहला रहे थे कि इतने में महेन्द्र आ गया। परपुरुष के साथ मूमल को देख उसकी बेचैनी भांप सूमल ने अपने सिर पर पहनी पगड़ी उतार उसका भ्रम दूर किया और मूमल की बहिन सूमल होने का परिचय दिया। महेन्द्र को अपने बीच पा दोनों बहिनें 'महेन्द्र मेरा, महेन्द्र मेरा' कहती मचल पड़ीं। इस खींचतान में दोनों के बीच तलवारें खींच गई। इससे सूमल का हाथ चोटिल हो रक्त रंजित हो गया।

दूसरी घटना सन् 1968 में गुजरात के आनन्द में घटी। वहां प्रदर्शित भक्तिमती मीरांबाई के जीवन से सम्बन्धित 'म्हाने चाकर राखोजी' नृत्य-नाटिका के अन्तिम दृश्य में मीरां बनी मैं कृष्ण को ढूंढ़ते व्याकुल हो धड़ाम से गिर पड़ती हूं। देखते-देखते मीरां फूलों की ढेरी बन जाती है। एक-एक कलाकार आकर उसकी समाधि पर पुष्प चढ़ाते हैं तब तक मीरां को कट्ठा श्वांस रोके रखना पड़ता है। उस दिन मैं मीरां के भाव में गिरते ही सुध खो बैठी। कुछ भी भान नहीं रहा। नाटिका की समाप्ति के बाद भी जब मैं नहीं उठी तो सबके होश खट्टे हो गये। सामरजी तत्काल मुझे डॉक्टर के पास ले गये। कोई आध घंटे बाद होश आया तब सबके जी में जी आया।''

सन् 1971 में मेरे द्वारा सम्पादित सामर अभिनन्दन ग्रंथ 'गेह्रो फूल गुलाब रो' में मैंने लिखा भी- 'मीरां की भूमिका में शकुन्तला भाव विह्वल हो जाती है, खो जाती है। उसके नख शिख में साक्षात् मीरां आ समाई है।'

एक और मजेदार घटना दतिया में घटी। गुजरात के टिप्पणी नृत्य के ठीक बाद डांडिया रास की प्रस्तुति थी। इसमें लुंगी की जगह घाघरा पहनना था। अन्यों ने फटाफट पोशाक बदल ली किन्तु शकुन्तला के घाघरे के नाड़े में गांठ पड़ जाने से वह पोशाक नहीं बदल पा रही थी। उसकी यह मुसीबत देख पोशाक निर्माता उदयप्रकाश ने आव देखा न ताव अपने दांतों से नाड़ा काटकर सबको भारी परेशानी से मुक्ति दिलाई। उदयप्रकाश विविध प्रांतों की लोकरंगी नृत्यों तथा कठपुतलियों की सभी प्रकार की पोशाकें बनाने में बड़े प्रवीण, कुशल तथा दक्ष कारीगर थे। यह घटना मुझे उदयप्रकाश ने भी सुनाई।

शकुन्तला ने कहा- ''ऐसा ही वाकया एक अन्य जगह घटा। नाटिका की समाप्ति के बाद एक महिला फूलों का टोकरा लेकर आई और बोली, आपने मीरां को साक्षात् कर दिया। यह कह वह मेरे पांवों में पड़ गई। फिर गले मिली। मुझे लगा उसका जीवन तो धन्य हुआ ही, मेरा मीरां बनना भी मुझे उतना ही धन्य सार्थक कर गया।''

इन नृत्य-नाटिकाओं के अलावा एक और 'पणिहारी' नाटिका थी। राजस्थान में पणिहारी नाम से एक कथा-गीत प्रचलित है जिसकी व्यापकता कई अन्य प्रान्तों में भी देखने को मिलती है।

शकुन्तला ने बताया कि इन नृत्य-नाटिकाओं के अतिरिक्त फागुन, बनवासी, कीर, घाटा बेनाड़ा, घूमर, घूमारा जैसे नृत्यों में भी उसकी मुख्य भूमिका रही। लोकदेवता रामदेवजी की आराधना में उनके भक्त कामड़ तेराताली का प्रदर्शन करते हैं। इसमें पुरुष भजन गाने के साथ तन्दूरा-मजीरा बजाते हैं और महिलाएं जमीन पर बैठी-लेटी अपने शरीर पर बंधे तेरह मजीरों पर नाना हाव-भाव लिए नृत्य निरत रहती हैं। सामरजी ने तेराताल के नाम से इसी नृत्य का गुंफन किया। इस भक्ति-आराधना नृत्य में दर्शक लवलीन हो जाते।

कलामण्डल द्वारा कठपुतली कला को पुनर्जीवित करने का बीड़ा भी उठाया गया। पहलीबार नागौर जिले के जीजोट गांव के नाथू भाट के कठपुतली दल का अमरसिंह राठौड़ का खेल देखा और उसी की भाव-भूमि पर नया 'मुगल दरबार' खेल तैयार किया जिसने रूमानिया के अन्तर्राष्ट्रीय कठपुतली समारोह में विश्व का प्रथम पुरस्कार पाया।

यह वह समय था जब कठपुतली खेल बताने वाले भाटों के हाथों में यह खेल अन्तिम सांसें ले रहा था। समारोह से पूर्व प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री को उनके निवास पर यह खेल बताया गया। इसे देख वे उछल पड़े। बोले- 'यदि भारत की कठपुतलियां इतना कमाल दिखा सकती हैं तो निश्चय ही विश्व रंगमंच पर ये कठपुतलियां बाजी मार सकती हैं।' उनका यह कथन अक्षरश: सत्य निकला।

उल्लेखनीय है कि शास्त्रीजी ने ही अपनी ओर से विशेष रूचि लेकर सामरजी सहित कुल चार कलाकारों को भारतीय प्रतिनिधि के रूप में भेजा था। यदि वे नहीं भेजते तो भारतीय कठपुतली कला का हमें अवसान ही देखने को मिलता।

ट्यूनीशिया से लौटकर कलामण्डल से प्रकाशित तथा मेरे द्वारा सम्पादित मासिक रंगायन के अगस्त 1969 के अंक में सामरजी ने लिखा- ''जहां अन्य दलों के साठ-साठ कलाकार अपने वृहत् वृन्द-वादन दल के साथ लोगों को मुग्ध करते थे वहां हमारा बारह कलाकारों का लघु दल अपनी स्वाभाविक एवं चमत्कारिक नृत्य-मुद्राओं से समारोह पर छा गया। सर्वत्र यही चर्चा रही कि यह संक्षिप्त दल अपने साथ सौ कलाकारों की शक्ति लाया है।

हमारे भारतीय लोकनृत्यों में गांवों की अल्हड़ता तथा पारम्परिक प्रतिभा की अद्वितीय चमक थी। कलाकारों के शरीर में अद्भुत लोच एवं चेहरे पर अद्वितीय तन्मयता थी। भाव-भंगिमाओं में स्वाभाविक सादगी और प्रस्तुतीकरण में प्रबल आत्मविश्वास था। संगीत एवं ताल की सीमा में रहते हुए भी ये कलाकार पूर्णत: स्वतंत्र थे। नृत्य में पहाड़ी नदी का सा अल्हड़ प्रवाह था।

समारोह का लगभग सौ फीट लम्बा और चालीस फीट चौड़ा रंगमंच इन कलाकारों के लिए चुटकी का सा खेल था। पुरुष कलाकार अपने घेरदार झग्गों में गम्मत करते हुए और स्त्री कलाकार अपने घेरदार घाघरों में चकरियां लेते हुए सारे रंगमंच पर छा गए।

नृत्यों में चार चांद लगाने वाली इनकी रंग-बिरंगी, चमकीली, आकर्षक एवं कलात्मक पोशाकें इनको अधिक प्रभावशाली बना रही थी। वादकों की शहनाई, मजीरे, नक्काड़े, ढोलक तथा गायकों की सुरीली धुनें, संगीत की तानें एवं मुरकियां सबके मन को सम्मोहित कर रही थीं। पांच हजार दर्शकों का जनसमूह प्रदर्शन देख आत्मविभोर हो उठा और 'इन्डी-इन्डी ब्रेवो' की ध्वनि से समस्त वातावरण गुंजायमान हो उठा। जीवन के प्रत्येक पक्ष में अपनी रंगीन और मौलिक पोशाक पहिनने वाले हमारे कलाकार सबकी आंखों के तारे बन गये।''

इसके बाद तो कलामण्डल द्वारा पुतली रामायण, संगठन में बल, वैशाली का अभिषेक, पचफूला, सुजाता नामक धागा तथा छड़ पुतली नाटिकाएं तैयार कीं गईं। शकुन्तला के हाथों ये नाटिकाएं भी सवाई बनकर निखरीं। दस्ताना पुतली की हड़ताल नाटिका के तो हजार से भी ऊपर प्रदर्शन दिये। इस नाटिका के सर्वाधिक प्रदर्शन शिक्षण संस्थाओं में दिये जहां आये दिन हड़ताल समस्या बनी हुई थी। वहां के छात्रों ने सदा के लिए हड़ताल करना बन्द कर दिया।

कलामण्डल में रहते-रहते शकुन्तला में सामरजी की तरह ही कला-संस्था खोलने का विचार कौंधा फलस्वरूप शुभस्य शीघ्रम अपने नाम-राशि के अनुरूप ही 9 अप्रेल 1992 को शाकुन्तलम नामक संस्था की स्थापना की। पहले पहल तो डांस क्लास में बच्चों को नृत्य प्रशिक्षण दिया फिर धीरे-धीरे उनकी प्रस्तुति देनी प्रारम्भ की जिससे और अनेक बच्चे सीखने आते गये। सार्वजनिक कुछ ऐसे कार्यक्रम भी किये जिनमें शहर के विभिन्न क्षेत्रों में नामचीन लोगों का सम्मान किया गया। ऐसे ही एक कार्यक्रम में नगर विकास प्रन्यास के अध्यक्ष नरेन्द्रसिंह लाखेरी आये जो हमारे कार्यक्रम से बड़े प्रभावित हुए और हमें भूमि आवंटित की जिस पर एक अच्छी रंगशाला तथा अन्य कक्ष बनाये गये। मुझे याद पड़ता है, एक समारोह में मुझे भी शाकुन्तलम ने लोककलाविद् सम्मान देकर मेरा बहुमान किया था।

प्रतिदिन टीपटोप रहने वाली छरहरी काया में शकुन्तला को कभी मैंने थकी-हारी और हमप्रभ-उदास नहीं देखा। अपनी उन्मुक्त हंसी और ठहाकेदार मगन मस्ती में कलामय करीने की लावण्य लचक लिये लमछराती वह सदैव अथक बनी रही। एक बार में ही किसी कला कर्मिता को अपने अन्तस में साधकर अपनी भावांगियों में रसवान बनाने की कला में पारंगत होने का ही यह गुण रहा कि सामरजी ने उसे श्रेष्ठतम कलानैत्री के रूप में हर नृत्य, नृत्यनाटिका तथा कठपुतली प्रदर्शन में अग्र भूमिका दी। इस तरह एक नन्ही बूंद बनकर वह कलामण्डल में आई और एक सीपी का मोती बन चली गई। उसका चुलबुलापन चंचल और चकोरपन, मीठी मरोड़, वाणी-विनोद तथा हर पल कर्मशील-कर्मठ प्रयोगधर्मी बने रहने का ओज सात दशक बाद आज भी उजलदंती बना हुआ है।

देखते-देखते शाकुन्तलम ने रजत वर्ष की यात्रा पूरी कर ली। इन पिछले पच्चीस वर्षों में इस संस्था का देशव्यापी फैलाव देख शकुन्तला कहती है, 'यह फैलाव एक पड़ाव मात्र है जिसका कतई गर्व नहीं है मगर अहसास है कि हमारी कला-यात्रा एक तीर्थयात्री की तरह पूरे देश का तीर्थाटन करने में लगी हुई है। यह उत्तुंग उल्लास है कि जहां-जहां प्रवासी राजस्थानी भाई-बहिन हैं वहां-वहां तक हमारी पहुंच बनी है। वे लोग अभी भी राजस्थानी रंगों में सबरंग होने की प्यास, आश तथा उत्कण्ठा रखते हैं। इसी कारण अब तक डेढ़ लाख के करीब, छह साल की बालिका से लेकर साठ साल की बहिनों को लोकनृत्यों का प्रशिक्षण देकर हमने रंगीले राजस्थान का परचम दिया है।' ऐसी यह यात्रा अविराम, अभिराम, अविकल, अथक तथा अविस्मरणीय बनी रहे।

'कैस्ट्रॉल गैरेज गुरू- द सुपर मेकेनिक शो' लॉन्च

उदयपुर। भारत की अग्रणी लुब्रिकेंट कंपनी कैस्ट्रॉल ने एक नये रियलिटी टीवी शो और मास्टरक्लास 'कैस्ट्रॉल गैरेज गुरू- द सुपर मैकेनिक शो' को लॉन्च किया है, जिसके होस्ट जिमी शेरगिल हैं।

यह शो भारत की सबसे बड़ी मैकेनिक कुशलता परीक्षण पहल- कैस्ट्रॉल सुपर मैकेनिक कॉन्टेस्ट की पूरक है, जिसे वर्ष 2017 में शुरू किया गया था और वर्ष 2018 में इसका द्वितीय संस्करण चल रहा है। इसका निर्माण बीबीसी स्टूडियोज ने किया है और इसका प्रसारण ज़ी अनमोल पर 30 सितंबर से प्रत्येक रविवार रात 10:30 बजे किया जायेगा। कैस्ट्रॉल इंडिया में मार्केटिंग के वाइस प्रेसिडेन्ट केदार आप्टे ने कहा कि यह टीवी श्रृंखला भारत के मैकेनिकों के जीवन पर केन्द्रित है और इस प्रतियोगिता में उनकी यात्रा द्वारा उनके सुपर मैकेनिक में बदलने के सफर को दर्शाती है। इसमें मास्टरक्लासेस भी होती हैं, जहाँ विशेषज्ञ वाहनों की मरम्मत और रख-रखाव पर अपना ज्ञान साझा करते हैं। इस शो में सुपर मैकेनिक कॉन्टेस्ट भी है, जिसका संचालन देश के नौ शहरों में किया जाता है। ग्रैण्ड ऑल इंडिया फिनाले ऑफ कैस्ट्रॉल सुपर मेकेनिक कॉन्टेस्ट का आयोजन मुंबई में किया जाता है। यह शो लोकप्रिय बॉलीवुड अभिनेता जिमी शेरगिल का टीवी डेब्यू है।

सिंघल फाउन्डेशन का पुरस्कार समारोह संपन्न

उदयपुर। योग गुरु बाबा रामदेव ने कहा कि सृष्टि का शासन वेद के विधान से ही चलता है। वेद किसी मजहब की

पुस्तक या शादी-ब्याह, पूजा पाठ या गृहप्रवेश कराने के मंत्र नहीं है, बल्कि ऐसा विधान है, जिससे सृष्टि का शासन चलता है। बाबा रामदेव सिंघल फाउण्डेशन की ओर से आयोजित भारतात्मा अशोक सिंघल वैदिक पुरस्कार समारोह को संबोधित कर रहे थे। विश्व हिंदू परिषद के पूर्व अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष अशोक सिंघल की याद में सिंघल फाउंडेशन की ओर से 'भारतात्मा अशोक सिंघल वैदिक पुरस्कार समारोह' में सर्वश्रेष्ठ वैदिक स्कूल के रूप में आलंदि महाराष्ट्र के श्री सदगुरु निजानंद महाराजवेद विद्यालय को 7 लाख, सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी नीमच मध्यप्रदेश के पंकजकुमार शर्मा को 3 लाख, सर्वश्रेष्ठ शिक्षक वाराणसी के श्रीधर अडि को 5 लाख रुपये पुरस्कार राशि दी गई। इस वर्ष 81 वर्षीय विनायक बादल को लुप्त हो रही शतपथ ब्राह्ममण की शिक्षा को पुनरू जागृत करने के लिए वेदार्पित जीवान लाइफ टाईम अचीवमेंट पुरस्कार दिया गया। स्वामी गोविंददेव गिरि ने जूरी का सम्मान किया। सिंघल फाउंडेशन के ट्रस्टी सलिल सिंघल ने कहा कि आयोजन का मूल उद्देश्य भारत में वैदिक शिक्षा को प्रोत्साहित करना है और इस कार्य में जुटे लोगों की सराहना करना है।

नई रिटेलर फैसिलिटी का उद्घाटन

उदयपुर। जगुआर लैंड रोवर इंडिया ने जयपुर के एयरपोर्ट एरिया में एएमपी मोटर्स की नई रिटेलर फैसिलिटी का शुभारंभ किया। इसका उद्घाटन जगुआर लैंड रोवर इंडिया लि. (जेलएलआरआईएल) के प्रेसिडेंट एवं प्रबंध निदेशक रोहित सूरी और एएमपी ग्रुप के प्रबंध निदेशक गुरमीत सिंह आनंद ने किया।

यह नई रिटेलर फैसिलिटी जयपुर के सबसे तेजी से विकसित हो रहे क्षेत्र में स्थित है। इसे उच्चतम गुणवत्ता का सेल्स अनुभव प्रदान करने के लिए डिजाइन एवं सुसज्जित किया गया है। इसमें 8 कार को डिस्प्ले किया जा सकता है जोकि जगुआर एवं लैंड रोवर के प्रोडक्ट पोर्टफोलियो का प्रदर्शन करने में सक्षम हैं।

रोहित सूरी ने कहा कि हमें जयपुर में अपनी नई रिटेलर फैसिलिटी की पेशकश कर खुशी हो रही है। हम शहर में जगुआर एवं लैंड रोवर उत्पादों की खरीद के लिए अपने उपभोक्ताओं को आसान पहुंच मुहैया कराने के लिए प्रतिबद्ध है। हमने इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए हमारे उपभोक्ताओं के लिए यह बेहद आधुनिक शोरूम फैसिलिटी खोली है।

बॉलीवुड अभिनेत्रियों को याद किया

उदयपुर। अपनी तरह के एक खास उत्सव के रूप में स्थापित हो चुके लक्स गोल्डन रोज़ अवॉर्ड्स का जन्म बॉलीवुड अभिनेत्रियों की सुंदरता और उत्कृष्ट प्रदर्शन का जश्न मनाने वाले एकमात्र अवार्ड शो के साथ हुआ था। इन अभिनेत्रियों ने अपने मंत्रमुग्ध कर देने वाले करिश्माई प्रदर्शनों के साथ लाखों लोगों को आकर्षित और प्रेरित किया। इस वर्ष, लक्स ने अपने शानदार समारोह के तीसरे संस्करण की घोषणा की, जो न केवल फिल्म इंडस्ट्री के लिए, बल्कि दुनिया भर के प्रशंसकों के लिए एक विशेष रूप से महत्वपूर्ण अवसर बन गया है। पुरस्कारों की घोषणा एक भव्य फिल्म के साथ की गई है।

यूटीआई वैल्यू अपॉर्च्यूनिटीज फंड

उदयपुर। यूटीआई वैल्यू अपॉर्च्यूनिटीज एक फंड है, जो किसी दिए गए स्टॉक के सापेक्ष आंतरिक मूल्य के संदर्भ में व्यक्त किए गए अवसरों की तलाश करता है, जिसका अर्थ है बाजार पूंजीकरण स्पेक्ट्रम में, निवेश की 'वैल्यू' शैली को अपनाना, जिसे हम मल्टी-कैप फंड कहते हैं। यहां 'वैल्यू' अपने आंतरिक मूल्य से कम के लिए चीजें खरीद रही है। आंतरिक मूल्य केवल नकदी प्रवाह का वर्तमान मूल्य है जो कंपनी अपने शेयरधारकों के लिए समय-समय पर उत्पन्न करती है। यूटीआई वैल्यू अपॉर्च्यूनिटीज फंड ऐसी कंपनियों पर ध्यान केंद्रित करता है जिनके पास उच्च आंतरिक मूल्य है और जिनमें समय के साथ नकदी प्रवाह उत्पन्न करने की क्षमता है।

यूटीआई वैल्यू अपॉर्च्यूनिटीज फंड 2005 में लॉन्च किया गया था। 30 जून 2018 तक फंड का एयूएम 4,610 करोड़ रुपए था और इसमें 5,12,000 यूनिट होल्डर अकाउंट थे। फंड में पूरे बाजार स्पैक्ट्रम के बीच खुद को अधिक सक्रिय रूप से स्थापित करने का लचीलापन है। मिड कैप एक्सपोजर वैल्यूएशन डिफरेंस के आधार पर अधिक व्यापक रूप से भिन्न हो सकता है। 30 जून 2018 तक फंड ने लगभग 71 प्रतिशत हिस्सा लार्ज कैप में निवेश किया है और शेष मिड एंड स्मॉल कैप में। इस स्कीम के शीर्ष होल्डिंग्स में एचडीएफसी बैंक, इंडसइंड बैंक, इंफोसिस, मारुति सुजुकी इंडिया लि., आईसीआईसीआई बैंक लि., महिंद्रा एंड महिंद्रा फाइनेंशियल सर्विसेज लि., टीसीएस, गेल इंडिया, आईटीसी लि. और टेक महिंद्रा है, जिनका पोर्टफोलियो के कॉर्पस में 51 प्रतिशत से अधिक का हिस्सा है।

राणा येस बैंक के एमडी और सीईओ

उदयपुर। येस बैंक लि. के एमडी एवं सीईओ के रूप में राणा कपूर की पुन: नियुक्ति हुयी है। यह एमडी एव सीईओ की पुन: नियुक्ति के विषय पर स्टॉक एक्सचेंज को 19 सितंबर, 2018 को जारी येस बैंक की विज्ञप्ति के संदर्भ में है। सबसे पहले बैंक अपने शेयर धारकों को सूचित करना चाहता है कि बैंक और उसके एमडी और सीईओ को बैंक के निदेशक मंडल भारतीय रिजर्व बैंक और अन्य योग्य शेयर धारकों द्वारा पूर्णतया निर्देशित किया जाएगा। बैंक का प्रबंधन अपने सभी शेयर धारकों के हितों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है।

इसके अलावा बैंक ने कहा कि 2004 के मध्य में अपना परिचालन शुरू करने के बाद, पिछले 14 वर्षों से पूंजी पर्याप्तता, क्रेडिट जोखिम, लाभप्रदाता, परिचालन दक्षता, वृद्धि आदि जैसे सभी महत्वपूर्ण मानकों को लेकर बैंक का व्यापार और वित्तीय परिणामों के निरंतर वितरण का एक विस्तृत ट्रैक रिकॉर्ड है।

पीआईएमएस के छात्रों का उत्कृष्ट प्रदर्शन

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पीआईएमएस), उमरड़ा उदयपुर के एम.बी.बी.एस के छात्रों ने 16 से 22

सितम्बर तक एम्स दिल्ली में आयोजित पल्स कल्चरर प्रोग्राम में भाग लेकर विभिन्न प्रतियोगिताओ में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए 9 मेडल प्राप्त किये। इसमें मनीष सिंह ने दो मेडल दौड़ में तथा एक मेडल कैरम में हासिल किया। महेश भाकर ने दो मेडल दौड़ में, एक मेडल मैराथन एवं 800 मीटर रेस में द्वितीय स्थान पर रहते हुए एक मेडल प्राप्त किया। इसके अतरिक्त पीआईएमएस की क्रिकेट टीम ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए प्रथम स्थान व टग ऑफ़ वॉर में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। उल्लेखनीय है कि यह प्लस फेस्ट एशिया का सबसे बड़ा मेडिकल कॉलेज फेस्टिवल है इस फेस्ट में पूरे भारत से लगभग 400 मेडिकल कॉलेजों के विद्यार्थी हिस्सा लेते है।

जिंक़ द्वारा दस हजार फुटबाल खिलाड़ियों को प्रशिक्षण : दुग्गल

उदयपुर। हिन्दुस्तान जिंक़ के यशद भवन में पुलिस महानिरीक्षक विशाल बसंल, जिला कलेक्टर विष्णुवचरण मलिक, ज़िंक फुटबॉल अकादमी के

अध्यक्ष अनन्य अग्रवाल तथा मुख्यकार्यकारी अधिकारी सुनील दुग्गल ने फुटबॉल प्रोजेक्ट के लोगो का अनावरण कर किया।

इस अवसर अनन्य अग्रवाल ने कहा कि वेदांता देश में ग्रासरूट फुटबाल के विकास में मदद के लिए प्रतिबद्ध है। हमारा लक्ष्य भारत को वैश्विक फुटबाल मानचित्र पर स्थापित करना है। हम अगले पांच सालों में भारत को एशिया की शीर्ष-10 और दुनिया की शीर्ष-50 टीमों में देखना चाहते हैं।

सुनील दुग्गल ने कहा कि राजस्थान में 10,000 खिलाड़ियों की प्रतिभा को निखारने के लिए जिंक़ फुटबाल अकादमी बनाई गई है। आने वाले तीन-चार सालों में लगभग 60 प्रतिशत बच्चें हमारी अकादमी से होने का लक्ष्य रखा गया है। ज़िंक फुटबॉल अकादमी द्वारा राजस्थान में 64 सामुदायिक फुटबॉल केंन्द्र चलाये जा रहे हैं जिसमें दो हजार से अधिक बालक-बालिकाओं को फुटबॉल के आधुनिक गुर सिखाएं जा रहे हैं।

विशाल बंसल ने कहा कि टेक्नोलॉजी की दृष्टि से अग्रणी जिंक़ अकादमी में ग्रामीण फुटबाल प्रतिभाओं को आगे बढ़ने का अवसर मिलेगा। विष्णुचरण मलिक ने स्थानीय खेल प्रतिभाओं को आगे लाने में जिंक़ के प्रयास को अनुकरणीय बताया। समारोह में जिंक़ की सीएसआर हेड-नीलिमा खेतान, वाइस प्रेसीडेन्ट एवं हेड-कार्पोरेट कम्यूनिकेशन पवन कौशिक, हेड-कार्पोरेट अफेयर्स प्रवीण जैन, एवं एचआर हेड संजय शर्मा उपस्थित थे।

'जेफार्म सर्विसेज' लॉन्च

उदयपुर। भारत के दूसरे सबसे बड़े ट्रैक्टर निर्माता टैफे ने अपनी सी.एस.आर.(सामाजिक) पहल कदमियों 'जेफार्म सर्विसेजश् और 'जेफार्म सर्विसेज ऐपश् के राष्ट्रीय स्तर पर विस्तार की घोषणा की है। इस नयी पहलकदमी के साथ, टैफे भारतीय किसानों की आय को बढ़ावा देने के लिए टेक्नोलॉजी आधारित साझेदारी वाली अर्थव्यवस्था के लाभ प्रदान करता है। टैफे की चेयरमैन और सीईओ सुश्री मल्लिका श्री निवासन ने बताया कि यह ऐप किसानों को ट्रैक्टर और आधुनिक कृषि मशीनरी लेने के लिए मुफ्त सुविधा प्रदान करता है। अपने मौजूदा ट्रैक्टर और कृषि उपकरण किराए पर देने वाले किसानों मुफ्त जेफार्म सर्विसेज ऐप के किसान-से-किसान मॉडलष् (एफ 2 एफ) के माध्यम से इन उपकरणों को किराये पर लेने के इच्छुक किसानों से सीधे मुफ्त में जोड़ दिया जाता है। यह ऐप उनको किसान उद्यमियों से संपर्क करने, किराये की कीमतें तय करने और अपनी संबंधित आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम बनाता है।

स्वास्थ्य कार्यक्रम निरामया की शुरूआत

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज

(पीआईएमएस), हॉस्पिटल उमरड़ा में राजस्थान सरकार के अंतर्गत स्वास्थ्य कार्यक्रम निरामया की शुरुआत की जिसका मिशन 'स्वस्थ गांव-स्वस्थ राजस्थान' है। इस कार्यक्रम के क्रियान्वयन के लिए पीआईएमएस ने 25 टीमों को 44 गावों के स्वास्थ्य निरक्षण के लिए भेजा है। इस अवसर पर पीआईएमएस के चेयरमैन आशीष अग्रवाल, मेडिकल सुप्रीडेन्डेन्ट डॉ. डी. आर. माथुर, निरामया कार्यक्रम जिला प्रबंधक डॉ. डी.एस. जी. राव, आईईसी समन्वयक डॉ. नितिशा फेड्रिक उपस्थित थे। उन्होंने टीमों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। ये टीमें इस कार्यक्रम के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में हैल्थ, सेनीटेशन व हाईजीन की जानकारियां प्रदान करेंगी। हर टीम में एक सुपरवाइजर व छह सदस्य हैं। पीआईएमएस के कम्युनिटी मेडिसिन विभाग ने इस कार्यक्रम का संचालन किया।

एडवांस्ड कनेक्टिविटी फीचर्स की पेशकश

उदयपुर। जैगुआर लैंडरोवर इंडिया ने अपने फ्लैगशिप मॉडल्स, रेंज रोवर, रेंज रोवर स्पोर्ट और डिस्कवरी आदि गाड़ियों में इनकंट्रोल पैकेज (कार के अंदर ही कम्युनिकेशन और कनेक्टिविटी से संबंधित फीचर्स, के तहत प्रमुख एडवांस्ड कनेक्टिवटी फीचर्स, जैसे कि प्रोटेक्ट, रिमोट प्रीमियम और सिक्योर ट्रैकर ऑफर करने की शुरुआत कर दी है। जैगुआर ने अपनी नई पेशकश के साथ इनकंट्रोल पैकेज, जिसमें पहले से ही वाई-फाई हॉट स्पॉट जैसे कई फीचर्स शामिल है, को और मजबूत बनाया है।

जैगुआर लैंड रोवर इंडिया लि. (जेएलआरआईएल) के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक रोहित सूरी ने कहा कि हमारा प्रयास सबसे बेहतरीन और आधुनिक ढंग से जुड़ी हुई नवीनतम कार टेक्नोलॉजी को भारत में लाना है। हमें खुशी है कि नई तकनीक को पसंद करने वाले हमारे तकनीक प्रेमी उपभोक्ता अब ज्यादा सुरक्षित ड्राइविंग का अनुभव ले सकते हैं।

जैगुआर लैंड रोवर ने पहले 2017 में 4जी की स्पीड से चलने वाले वाई-फाई और प्रो सर्विसेज लॉन्च किया था। इसी के विस्तार के तौर पर जैगुआर लैंड रोवर ने अपनी गाड़ियों में अब लैंड रोवर ऑप्टिमाइज्ड असिस्टेंस और प्रोटेक्ट, रिमोट प्रीमियम और सिक्योर ट्रैकर के तहत एसओएस इमरजेंसी कॉल के फीचर्स भी जोड़े हैं।

मेवाड़ से उठी कांग्रेस में जैन प्रतिनिधित्व की मांग

उदयपुर। राजस्थान में आगामी विधानसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी को मेवाड़ की कम से कम दो सीटों पर जैन प्रत्याशी को अवश्य टिकट देना चाहिए ताकि मेवाड़ विजय के साथ ही राजस्थान जीत का कांग्रेस का सपना साकार हो सके। ये विचार मेवाड़ जैन समाज की ओर से सेक्टर-3 स्थित गुरु पुष्कर साधना केंद्र में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता रघुवीरसिंह मीणा का सीडब्ल्यूसी मेम्बर बनने पर आयोजित भव्य स्वागत समारोह में जैन समाज के वक्ताओं ने व्यक्त किए।

वक्ताओं ने कहा कि समूचे मेवाड़ क्षेत्र में जैन समाज का वर्षों से व्यापारिक, बौद्धिक और सामाजिक वर्चस्व रहा है। इस समाज ने सभी समाजों के साथ मिलकर क्षेत्र के विकास में अतुलनीय योगदान दिया है। राजनीति में कंधे से कंधा मिलकर बढ़-चढ़कर भागीदारी निभाई है। हर चुनाव में जैन समाज के वोट निर्णायक होते हैं। भारतीय जनता पार्टी जैन प्रत्याशियों को टिकट देकर चुनाव जीतती आई है। इस बार कांग्रेस पार्टी में जैन समाज को प्रतिनिधित्व देने से जीत सुनिश्चत हो सकेगी।

इस अवसर पर रघुवीर मीणा का अभिनंदन मावली से कांग्रेस के वरिष्ठ नेता नरेंद्रकुमार जैन, ब्लॉक कांग्रेस संगठन मंत्री दिलीप जारोली आदि ने शॉल, उपरना तथा मोमेंटो भेंट कर किया।

श्री मीणा ने कहा कि राजनीति ही नहीं, जीवन के हर क्षेत्र में उन्हें जैन समाज का सहयोग मिला है। उनकी व उनके परिवार की जीवनशैली जैन समाज से बहुत ज्यादा प्रभावित हैं। जैन समाज ने कांग्रेस पार्टी को जिताने में हमेशा अतुलनीय सहयोग किया है। इस बार वे खुद मेवाड़ से जैन समाज के जिताऊ प्रत्याशी को टिकट देने की पैरवी पार्टी में उच्च स्तर पर करेंगे।

पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. गिरिजा व्यास ने याद दिलाया कि महाराणा प्रताप जैन समाज के भामाशाह के सहयोग से ही स्वतंत्रता की लड़ाई को लड़ पाए थे। जैन समाज ने हमेशा सामाजिक समरसता में सहयोग किया है। इस समाज को मेवाड़ से प्रतिनिधित्व मिलना ही चाहिए। देहात जिलाध्यक्ष लालसिंह झाला ने कहा कि उन्होंने हमेशा जैन समाज के अच्छे व समर्थ प्रतिनिधियों को पार्टी में उचित पद दिलाया है तथा उच्च स्तर पर उनकी पैरवी की है। पूर्व जिला प्रमुख छगनलाल जैन ने कहा कि अब वक्त आ गया है सकल जैन समाज एकजुट होकर अपनी ताकत दिखाए, राजनीति में सशक्त स्थित दर्ज करवाए ताकि टिकट वितरण में उसे समान स्तर पर प्रतिनिधित्व मिल सके।

खासतौर पर कांग्रेस में मावली सहित अन्य सीटों से जैन प्रत्याशी को टिकट दिया जाना चाहिए। कार्यक्रम को ब्लॉक कांग्रेस संगठन महामंत्री दिलीप जारोली, नरसिंहपुरा समाज के अध्यक्ष अशोक शाह, जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्मल पोखरना, मेवाड़ संघ मुंबई के अध्यक्ष चौथमल सांखला, देहात महिला अध्यक्ष सीमा चोर्डिया, कांग्रेस शिक्षक प्रकोष्ठ के प्रदेशाध्यक्ष बाबूलाल जैन, कांग्रेस व्यापार प्रकोष्ठ के अध्यक्ष जसवंत गन्ना, यूसीसीआई के पूर्व अध्यक्ष केएस मोगरा, होलसेल क्लॉथ एसोसिएशन अध्यक्ष अजय पोरवाल आदि ने संबांधित किया। इस अवसर पर समाज की ओर से मावली से नरेन्द्र जैन, बड़ी सादड़ी से उत्सव भाणावत व लक्ष्मीलाल चपलोत को टिकट देने की मांग रखी गई।

सेवा परमोधर्म ट्रस्ट द्वारा शिक्षा-चिकित्सा में अर्थ सहयोग

उदयपुर। सेवा परमो ट्रस्ट ने चार कमजोर परिवारों को शिक्षा एवं चिकित्सा के लिए अर्थ सहयोग प्रदान किया है। उदयपुर निवासी प्रेमलता पालीवाल की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है। उसके परिवार में बीमार पति, 12 वर्षीय पुत्र कौशिक तथा 9 वर्षीय पुत्री योगिता है। प्रेमलता का पति यकायक किडनी की गम्भीर बीमारी से पीड़ित हो गया जिससे उसकी किडनी का प्रत्यारोपण करवाना पड़ा। परिवार की समस्त जमा पूंजी ईलाज में खत्म हो गई। ऐसे में दोनों बच्चों की पढ़ाई जारी रखना प्रेमलता के लिए नामुमकिन हो गया। इस पर प्रेमलता सेवा परमो धर्म ट्रस्ट पहुंची और अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल से मदद का अनुरोध किया। इस पर अग्रवाल ने ट्रस्ट एवं दानदाताओं के सहयोग से दोनों बच्चों की वार्षिक स्कूल फीस जमा कराई।

इसी प्रकार उदयपुर की टीना देवी के पति कुंदनसिंह का चार माह पूर्व किडनी की बीमारी से निधन हो गया जिससे परिवार पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा। आमदनी बंद होने के कारण परिवार दाने-दाने को मोहताज हो गया। ऐसे में टीना अपनी चार वर्षीय पुत्री तरुणा के स्कूल फीस की व्यवस्था भी नहीं कर पा रही थी। टीना को किसी परिचित से सेवा परमो धर्म ट्रस्ट के निशुल्क प्रकल्पों की जानकारी दी तो टीना एक पल भी गवाए ट्रस्ट पहुंची और अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल से मदद की गुहार लगाई। इस पर अग्रवाल ने तरुणा की वार्षिक स्कूल फीस जमा कराई।

इसी तरह कोटा निवासी 33 वर्षीय पूजा पिछले पांच माह से किडनी की गंभीर बीमारी से पीड़ित है। पूजा के पति विजय ने अहमदाबाद के अस्पताल में दिखाया जहाँ डॉक्टरों ने इसका एक मात्र विकल्प प्रत्यारोपण बताया है जिस पर लगभग 10 लाख रुपए खर्च आने का अनुमान लगाया गया है। पेशे से मजदूरी करने वाले विजय के लिए इतने बड़े खर्च की व्यवस्था करना अत्यन्त मुश्किल कार्य था। गत दिनों उन्हें सेवा परमो धर्म ट्रस्ट के निशुल्क सेवा प्रकल्पों की जानकारी मिली। इस पर विजय ने प्रशांत अग्रवाल को अपनी पीड़ा से अवगत कराया। इस पर अग्रवाल ने ट्रस्ट एवं दानवीर भामाशाहों के सहयोग से पूजा के ईलाज की सम्पूर्ण व्यवस्था कराई है।

उत्तरप्रदेश के इटावा शहर में रहने वाले स्कूली छात्र विवेक को हाथी पांव रोग से मुक्त कराने का सेवा परमो धर्म ट्रस्ट ने बीड़ा उठाया है। पिछले दिनों केरल के एक अस्पताल में चेकउप के बाद डॉक्टरों ने आश्वस्त किया कि ऑपरेशन के बाद हालत में 75 प्रतिशत सुधार आ जाएगा लेकिन खर्च सुनकर विवेक और उसके पिता हताश हो गए। क्योंकि पूर्व की जमा पूंजी और कर्ज से कराए गए तीनों ऑपरेशन नाकाम हो चुके थे। गरीब किसान अब एक मुश्त 75 हजार की राशी खर्च करने में असमर्थ था। अग्रवाल ने बताया की पिछले दिनों सेवा परमो धर्म ट्रस्ट से सम्पर्क करने पर उसके ईलाज का सम्पूर्ण व्यय ट्रस्ट ने वहन करने का निश्चय करते हुए, राशि स्वीक्रत की है।

67 प्रतिशत भारतीयों को है हृदय रोग का खतरा

उदयपुर। सफोला लाइफ ने अध्ययन द्वारा भारत में हृदय के स्वास्थ्य को लेकर जागरूकता लाने का प्रयास किया है। अध्ययन के अनुसार पेट के मोटापे के शिकार 67 प्रतिशत भारतीयों को हृदय रोग का खतरा है। यह अध्ययन उन बिन्दुओं को भी उजागर करता है जो पेट के मोटापे और उसके परिणाम स्वरूप होने वाले हृदय के खतरे के समान कारक है। जीवनशैली की बढ़ती चुनौतियों के साथ, भारतीय कम उम्र में ही हृदय रोग के खतरे के घेरे में आ रहे है। ऑफिस के लम्बे कार्यकाल, काम का तनाव, अनियमित भोजन, नींद की कमी और गतिहीन दिनचर्या इसके कुछ प्रमुख कारण हैं। इससे हृदय रोग, मोटापा और डायबिटीज में लगातार बढ़ोतरी हो रही है।

लीलावती हॉस्पिटल के एंडोक्रिनोलोजिस्ट पद्मश्री डॉ. शशांक जोशी ने कहा कि यह अध्ययन बताता है कि पेट के मोटापे के शिकार 67 प्रतिशत भारतीय के हृदय को खतरा है। इसलिए इस विश्व हृदय दिवस पर प्रत्येक व्यक्ति जागरूक हो कि अगर पेट पर चर्बी जमी है तो हृदय खतरे में है। साथ ही यह भी पता चला है कि अगर आपका बीएमआई सामान्य है परन्तु आपकी तोंद निकली हुई है तो भी हृदय को खतरा है। इसलिए हृदय का ख़ास ख्याल रखने के लिए सक्रिय कदम उठाने होंगे।

नूट्रिशनिस्ट सुश्री पूजा मखीजा ने कहा कि सफोला लाइफ अध्ययन ने पेट की चर्बी और हृदय रोग के आपसी सम्बन्ध को और भी पुख्ता कर दिया है, इसीलिए स्वस्थ्य जीवनशैली के लिए पेट के मोटापे को नियंत्रित रखना अत्यंत आवश्यक है। अत: मैं प्रत्येक जन से आग्रह करती हूं कि अपनी जीवनशैली में छोटे परन्तु महत्वपूर्ण बदलाव करे जिससे की पेट के मोटापे को दूर किया जा सके।

हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ कृपया सहयोग करें

संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
आजीवन सदस्य	3000/
शब्दरंजन के सहयात्री	1000/
साहित्यिक चौपाल	500/
वार्षिक संस्थागत	300/
वार्षिक व्यक्तिगत	250/

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

(**Shabd Ranjan,** UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

कृपया रचनाएं व समाचार ई-मेल से भेजें तो सुविधाजनक शीघ्र प्राप्त होंगी।

shabdranjanudr@gmail.com

हार्दिक आभार

(1) अमलनेर निवासी निधि सुरेश माहेश्वरी द्वारा 2000 रूपये शब्द रंजन के सहयोगी के रूप में सहयोगार्थ प्राप्त हुए। एतदर्थ हार्दिक आभार।

लेकसिटी डर्माडेंट फैशन फिएस्टा का भव्य आयोजन

उदयपुर। फैशन और ग्लैमर की चकाचौंध के बीच जब कुछ डाक्टर दम्पती ने रैम्प पर अपनी अदाओं के

जलवे बिखेरे तो तालियों की गड़गड़ाहट से माहौल खुशनुमा हो गया। डाक्टर दम्पती का संदेश जिंदादिली का संदेश यही था कि पेशा कोई भी हो, फिटनेस और खूबसूरती के प्रति संजीदा रह कर जीवन के हर पल का आनंद लिया जा सकता है और उसमें सौंदर्यबोध के रंग भरे जा सकेंगे।

अवसर था लेकसिटी मॉल के पास स्थित डर्माडेन्ट क्लिनिक की ओर से होटल रेडिसन में आयोजित डर्माडेंट फैशन फिएस्टा फैशन शो का जिसमें देश की 12 ख्यात मॉडल्स ने रैम्प पर कैटवॉक कर अपनी अदाओं के जलवे बिखेरे।

आयोजक डॉ. प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि इस दौरान शहर के कुछ डॉक्टर दंपती भी मंच पर छा गए जो जीवन की व्यतताओं के बीच भी अपने खूबसूरती और फिटनेस के लिए जाने जाते हैं। डॉ. प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि झीलों की नगरी में यह पहला अवसर था जिसमें चिकित्सा जगत से जुड़े लोगों ने फैशन का ऐसा सपनीला और यादगार संसार रचा। आयोजन का मकसद यह था कि आंतरिक और बाहरी सौंदर्य में बेहतरीन समायोजन करके अपनी दुनिया को खूबसूरत बनाया जा सकता है। मॉडल हो या फिर सेलिब्रिटी, हर आम और खास के दिलों पर राज करने के लिए निरंतर सजग प्रयास करने पड़ते हैं। त्वचा और बालों का बेहतर तरीके से, निरंतर ख्याल रखना होता है ताकि लंबे समय तक प्रभाव बरकरार रहे। फैशन और ग्लैमर इंडस्ट्री में बतौर मॉडल खुद को स्थापित करने और प्रतिस्पर्धा में बने रखने के लिए क्वालिटी एजुकेशन, पर्सनलिटी डेवलपमेन्ट और ग्रूमिंग के साथ साथ फिटनेस का बड़ा योगदान रहता है।

फैशन शो में स्पेशल गेस्ट अरावली पैथ लैब्स के डॉक्टर आनंद गुप्ता ने कहा कि इस अनूठे शो के माध्यम से इंडस्ट्री और यूथ में फिजिकल और मेन्टल फिटनेस के प्रति जागरूकता आएगी।

फैशन शो में डिजाइनर गौरव गौड़, मुक्त श्रीमाली और परम अरोड़ा द्वारा तैयार किये गए वेस्टर्न, इंडो वेस्टर्न और ट्रेडिशनल थीम आधारित 3 राउंड हुए। शो में पैनासोनिक के अमित वर्मा, कोरियोग्राफर राजेश शर्मा, मेकअप अशोक पालीवाल (प्रभात स्पा एंड सैलून) एंकर कृपा शर्मा सहित शहर के कई गणमान्य नागरिकों ने भाग लिया।

- डॉ. तुक्तक भानावत

अभिनव प्रकाशन

डॉ. महेन्द्र भानावत लिखित सद्य प्रकाशित पुस्तक गवरी।

श्री मेहता जेके पेपर के निदेशक बने

श्री ए. एस. मेहता जे. के. पेपर लिमिटेड के निदेशक बने। जे. के. पेपर लि. के वाइस प्रेसीडेंट एण्ड कम्पनी सेक्रेटरी सुरेशचन्द्र गुप्ता ने बताया कि मूलत: बड़ीसादड़ी निवासी श्री मेहता अब तक जे. के. पेपर लि. के प्रेसीडेन्ट के रूप में अपनी बेहतरीन सेवाएं देते आ रहे हैं। उन्हें अब निदेशक का अतिरिक्त कार्यभार सौंपा गया है। शब्द रंजन परिवार की हार्दिक बधाई।

कान्यो-मान्यो

अड़क इलाज रो समत्कार

कान्या नै चा पीवा री लागी री ही कै मान्यो आव परो। वने देखतांई कान्यो बोल्यो कै सुबै थनै चा री थड़ी माथै देख्यो, वातां रा घमोड़ा चालरिया हा। कई बापू आग्या? मान्यो बोल्यो कै ळारळा डेड़ दो मीनाऊं बापू मांदा हा। अचाणचक अस्पताल में भरती व्या जठै अपेंडीस रो ओपरेशन करावणो पड्यो। हांचो झूठो म्हीनो पूरो व्यो नै पछै ताव लागग्यो।

कान्यो ठावोठाव हुंकारो दे तो बोल्यो, अबै कूंकर है? अतराक में बापू चा ले नै आव परा। रामासामी कीधी। लाकड़ा रा ठीया माथै बैठ्या। कान्यो बोल्यो बापू कोई दन अस्यो नी ग्यो जदी आपने नी चिंतार्‌या। दुबला भी वेइग्या। अबै तो ठीक हो।

बापू बोल्या, आप लोगां री मेरबानी स्यूं अबै ठीक हूं। अपेंडीस रै लारै मने ताव लागग्यो। वो अस्यो कै आवै ने उतरै, आवै ने उतरै। डागडर साब मोकळी दवायां दीधी तोई पकड़ में नी आयो जदी केई तरे री जांचा लिख दीनी। रपोट में कई बीमारी नी जदी मूं बोल्यो कै रपोट तो कागदां में पण बीमारी म्हारा सरीर मां पाछो नी छोड़ री है।

मान्यो बोल्यो, दुबळा रा दो असाड़ वाली वात व्हेगी। बापू बोल्या, अठीने धंधो चोपट वेइग्यो ने वठी ने पया रो पाणी कर दीधो पण बखार पाछो नी छोड्‌यो जदी कान्यो बोल्यो, कई अड़क इलाज करायो वेतो। बापू नी समझ्या। बोल्या यो अड़क इलाज कई वे। मान्यो बोल्यो, झाड़ो-फूंको तंतर-मंतर। थाणे गाम मांय कोई समझ्या बूझ्या नी है कै?

बापू थोड़ाक मुळकाण दै बोल्या, करायो सा। म्हाणे वठै एक पुराणा भोपाजी है। नब्बे रे आं-पां। वी केई तरै रा टोटका टोटकी करै। पूरा चोखला वाळा री केई भांत री मांदगी रो सरतिया इलाज करै। म्हारो भी वांईज इलाज कीधो। भगवान वांनै लाम्बी उमर दै।

कान्यो बोल्यो, कतरोक खरचो पाणी व्यौ। बापू बोल्या, मुफत इलाज करै। कंडी चा तक नी पीवै। बोलै, कणी पांऊं कई लां तो म्हारो इलम खतम वेइजा। सेवा री भावनाऊं काम करां। या उमर भगवान री है। मरयां पाछै ऊपर जवाब देणो पड़ै। धरमराज लेखो लै।

मान्यो पूछ्यो, थांणो इलाज कई व्यो? बापू बोल्या कै हारतो मरतो म्हूं वणां कनै पोंच्यो। मनै देखतांई बोल्या कै घणी मांदगी झेली। एक डोरो मंतर बांध्यो नै बोल्या के अठूं घर पोंचता-पोंचता बापू आप री मांदगी गेलो पकड़ी जो पाछी झांकी ने नी देखेळा।

आपने कई बताऊं, घरे पोंचताई म्हूं हलको वेइग्यो नै ताव नाटतो बण्यो। यो तो समतकार ई लागै। दवा दारू नी। नी कोई जांच वांच। न कोई पईसो टको। भगवान वांनै लाम्बी उमर दै।

यो केई बापू री आंख्यां में तरायां भरवा लागगी। म्हां वांनै भरोसो बंधायो कै जो व्यो वीनै भूलो। आपणो किसमत बोदो हो जो टैम ठीक नी आयो। अबै थोड़ो ध्यान राखजो। सरीर कमजोर पड़ग्यो है। दो-चार दनां में लैण माथै आई जाई।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।